मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान
फरवरी
-९२

विश्व कल्याण रुद्र महायज्ञ

एवं

शिव-शक्ति साधना शिविर

हरिद्वार में—कुम्भ के अवसर पर

(२८ फरवरी से ४ मार्च १९९२ तक)

—कुम्भ से जुड़ी हैं महान घटनाएं, ऐतिहासिक आख्यान, देवताओं की विचित्र लीलाएं।

—कुम्भ है भारतीय संस्कृति का श्रेष्ठ प्रतीक और यह अवसर ऐसा है जहां लाखों, करोड़ों लोग गंगा स्नान और इस अवसर पर पूजा साधना करने के लिए पहुंचते हैं हरिद्वार के पावन तीर्थ पर।

—सिद्ध मुहूर्त में कार्य करने से उसका पुण्य फल तत्काल प्राप्त होता है, और इस कुम्भ के अवसर पर ऐसा ही तेजस्वी मुहूर्त आया है।

—साधना के मुहूर्त सिद्ध समय को कल्पवास कहा जाता है, और इस बार पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में, उनकी छत्रछाया में एक अद्भुत कल्पवास का आयोजन किया जा रहा है।

—कुम्भ से जुड़ा है-अमृत, और यह अमृत कुम्भ साधना के माध्यम से प्राप्त हो सकता है, हर साधक और शिष्य को जो इस **कुम्भ कल्पवास** में आयेगा और धन्य करेगा अपना जीवन।

—इस बार का आयोजन तो अनोखा ही है, सात दिन के इस कल्पवास में सात साधनाएं, सात यज्ञ और सबसे बड़ी महत्वपूर्ण घटना तो पूज्य गुरुदेव द्वारा यहां गंगा के तट पर दी जाने वाली **शिवोऽहम दीक्षा** होगी।

—**स्कन्द पुराण** में लिखा है कि तपस्या का पूर्ण फल तो शिष्य को गुरुदेव से दीक्षा प्राप्त कर ही प्राप्त होता है।

—इस बार कुम्भ कल्पवास के जो योग बन रहे हैं, वह योग चतुर्ग्रही योग बन रहा है, सिंहस्थ बृहस्पति के साथ बुध का आदित्य योग वही शनि और मंगल की स्वराशि युति के फलस्वरूप पूर्ण आहुति के समय गजकेसरी योग बन रहा है, यह दुर्लभ योग २७ वर्षों बाद आया है, और फिर तो आगे जाकर ऐसा योग सन् २०२३ में ही पुनः बन सकेगा।

—राम ने, कृष्ण ने, वशिष्ठ ने, विश्वामित्र ने, पाणिनी ने, अष्टावक्र ने, नारद ने इस शिव के स्थान पर पूजन साधनाएं और कल्पवास सम्पन्न किये, इसी क्रम को निभाना है परम पूज्य गुरुदेव के साथ, और धन्य करना है अपना जीवन-अपने लिये अपनी आने वाली सात पीढ़ियों के लिए।

—हरिद्वार की इस भूमि को साधना के जय घोष से गुंजयमान कर देना है, इस बार तो साधनाएं भी साक्षात् शिव स्वरूप गुरु मुख से शिष्यों के भीतर प्रवाहित होंगी।

आपकी संस्था सिद्धाश्रम साधक परिवार द्वारा विशेष आयोजन और कुम्भ के इस अवसर पर इस संस्था के प्रेमी सज्जनों द्वारा विशेष व्यय तथा प्रयास कर गंगा के किनारे भूमि, पण्डाल की व्यवस्था की गई है, इस अवसर पर जहां होटल, धर्मशालाएं ठसाठस भरी रहती हैं, वहां हजारों साधकों के लिए हर की पैड़ी

वर्ष–१२

अंक–२

फरवरी-१९९२

✲ ✲ ✲ ✲ ✲ ✲ ✲ ✲ ✲ ✲ ✲ ✲

: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग,

हाईकोर्ट कालोनी,

जोधपुर–३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : ३२२०९

आनो भद्राः कृतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

।। ॐ चिन्त्यं अचिन्त्यं वै परमं श्रुयते दियं तः ।।

मैं ऐसे गुरुदेव को भक्ति भाव से प्रणाम करता हूं जो चिन्त्य होते हुए भी अचिन्त्य हैं जो परम श्रेष्ठ और पूर्ण हैं, जिसकी प्रशंसा सम्पूर्ण वेदों और शास्त्रों ने गाई है ऐसे गुरु मेरे हृदय में स्थापित हों ।

तुम मुझ में हो
तो फिर
मैं तुम में हूं ही

पूर्णता तक पहुंचना ही जीवन का उद्देश्य और कर्त्तव्य है, उसी व्यक्ति का जीवन सफल और पूर्ण माना जाता है जिसने अपने जीवन में पूर्णता का स्वाद चखा हो, जो जमीन पर आकर आसमान को छूने का आनन्द लिया हो, वही समझ सकता है कि पूर्णता का आनन्द क्या है, वही समझ सकता है कि जीवन की मधुरिमा क्या है, और वही इस बात को अहसास कर सकता है कि जीवन का अन्तिम सत्य क्या है ।

और इस पूर्णता तक पहुंचने के लिए यह जरूरी है, कि साधक गुरु के हृदय में अपने आपको स्थापित करे, इसके लिए किसी निमन्त्रण की आवश्यकता नहीं होती, इसके लिए किसी औपचारिकता की जरूरत नहीं होती, यह तो एक वेग है, एक तीव्रता है, एक जीवन का सत्य है, कि वह अत्यन्त तेज गति से दौड़ता हुआ गुरु के हृदय में पूर्ण रूप से समा जाय, अपने आपको उसके हृदय में स्थापित कर दे, अपने छोटे से दीपक को उसके हृदय में जला दें, इसके लिए किसी प्रकार के शब्दों के आडम्बर की आवश्यकता नहीं होती, इसके पीछे कोई लेन-देन का भाव भी नहीं होता, यह तो जीवन का एक पाथेय है, जिस पर चल कर साधक या शिष्य अपने आपको गुरु के हृदय में स्थापित कर सकता है, यह तो एक विश्वास है जिसके बल पर वह गुरु का प्रिय बन सकता है, और इस विश्वास के आधार पर शिष्य तेजी के साथ उस परम सत्ता में लीन हो सकता है, जिसे सिद्धि या सफलता कहा गया है ।

शिष्य ज्ञानी नहीं होता, जिसने होशियारी दिखाई, जिसने ज्ञान का प्रपंच रचा वह पंडित तो हो सकता है, शिष्य नहीं हो सकता, जो गुरु के सामने अपने आपका बखान करे, अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने का प्रयत्न करे, उसे गुरु दे भी क्या सकता है, क्योंकि ऐसी स्थिति में गुरु और शिष्य के बीच में एक झीना सा पर्दा खड़ा हो जाता है, जिसके आर-पार कुछ भी देखना संभव नहीं होता, और जब तक यह झीना पर्दा तार-तार नहीं हो जाता, तब तक पूर्ण रूप से एक दूसरे में समा जाने की क्रिया कैसे संभव है ।

और जीवन में जिसने सिद्धि प्राप्त नहीं की, जीवन में जिसने सफलता का आनन्द नहीं लिया, उसके जीवन का प्रयोजन भी व्यर्थ हो जाता है, जिसने अपने छोटे से अस्तित्व को ही गुरु में विसर्जित होने की क्रिया सम्पन्न नहीं की वह पूरे ब्रह्माण्ड का भेदन किस प्रकार से कर सकता है, जो गुरु का ही विश्वास पात्र नहीं बन सका, वह सिद्धियों का विश्वास पात्र कैसे हो सकता है।

और गुरु के हृदय में स्थापित होने का एक मात्र रास्ता "**दीक्षा संस्कार**" ही है; यदि आप प्रारम्भिक दीक्षा प्राप्त कर अपने आपको सम्पूर्ण शिष्य समझने का दम्भ पा गये हो, तो यह निरा बचकाना प्रयास है, यदि आप एक बार गुरु के सामने बैठ कर सामान्य गुरु मन्त्र ले लिया तो इससे पूर्ण शिष्य बनने की क्रिया सम्पन्न नहीं हो जाती, यह तो प्रारम्भिक प्रयास है, और इसके आगे भी कई सोपान हैं, जिस पर चल कर ही साधक या शिष्य अपने आपमें पूर्णता प्राप्त कर सकता है।

और शास्त्रों में, साधना ग्रन्थों में इन सोपानों की भी व्याख्या की है, विवेचना की है और समस्त तांत्रिक ग्रन्थों में और उपलब्ध साधना ग्रन्थों में यह भली भांति स्पष्ट कर दिया गया है कि जीवन में पूर्ण सिद्धि **निम्न दस दीक्षाओं** को प्राप्त करने से स्वत: मिल जाती है, जिस साधक ने अपने जीवन में इन दस शक्तियों का साक्षात्कार कर लिया, जिस साधक ने अपने जीवन में एक-एक करके इन दस दीक्षाओं को प्राप्त कर लिया वह अपने आपमें ही सिद्ध पुरुष बन जाता है, इसके लिए न तो किसी प्रकार की माला की जरूरत होती है और न किसी साधना की, ऐसे साधक को न तो किसी प्रकार के देवी-देवताओं के पूजन की आवश्यकता होती है और न साधना ग्रन्थों के अध्ययन की, क्योंकि वह अपने आपमें ही एक अद्वितीय व्यक्तित्व बन जाता है, वह शिष्य के धरातल से ऊपर उठ कर उस जगह पहुंच जाता है, जहां सिद्धियां स्वयं अपने हाथों में विजय माला लिये खड़ी रहती हैं, जिसे आगे के जीवन में किसी प्रकार का कोई प्रयास करना ही नहीं पड़ता, क्योंकि यह अपने आपमें ही पूर्ण प्रयास है, अपने अपमें सफलता पूर्ण साधना है।

ये दस दीक्षा क्रम निम्न प्रकार से हैं, जिन्हें साधक को हर संभव तरीके से गुरु से प्राप्त कर लेनी चाहिए; यह जरूरी नहीं कि आप एक ही दिन में ये दस दीक्षाएं प्राप्त कर लें, पर जब भी समय मिले, जब भी सुविधा हो, तब इस प्रकार अनुनय विनय गुरु के सामने करें कि वह अगली दीक्षा प्राप्त करने का इच्छुक है, और यह गुरु को भी अधिकार है कि वह उस शिष्य को तोले, परखे, अनुभव करे और विचार करने के बाद ही उसे दीक्षा प्रदान करे।

पर जब ऐसी दीक्षा शिष्य को प्राप्त हो जाती है तो वास्तव में ही उसका जीवन धन्य हो उठता है, उसके चेहरे पर एक प्रकाश आ जाता है, आंखों की रोशनी चमकने लगती है और वक्षस्थल पर पूर्णता के चिन्ह अंकित होने लगते हैं।

ये दस दीक्षाएं हैं—

१-सामान्य दीक्षा	**६-ब्रह्माण्ड दीक्षा**
२-चैतन्य दीक्षा	**७-क्रिया योग दीक्षा**
३-परा-अपरा दीक्षा	**८-तंत्र दीक्षा**
४-निर्बीज दीक्षा	**९-सिद्धि दीक्षा**
५-ब्रह्म दीक्षा	**१०-पूर्णमदः दीक्षा**

ये सभी दीक्षाएं अपने आपमें सम्पूर्णता लिये हुए हैं, ये दीक्षाएं एक से एक बढ़ कर हैं और प्रत्येक दीक्षा में कुछ ऐसी शक्ति है, कुछ ऐसा प्रभाव है, कुछ ऐसा चिन्तन है जो शिष्य के हृदय को प्रकाशित कर देता है, उसके हृदय में रोशनी जगा देता है, और उसे काफी ऊंचा उठा कर ऐसी जगह स्थापित कर देता है, जहां साधारण मनुष्यों की पहुंच नहीं होती, उसका कद कई फीट ऊपर उठ जाता है, उसका व्यक्तित्व समाज में एक अलग प्रकार से ही

दिखाई देता है, और उसके चेहरे पर एक ऐसी आभा अनुभव होती है जो विरले लोगों के चेहरे पर होती है ।

और ये केवल दीक्षाएं ही नहीं हैं, अपितु गुरु द्वारा शिष्य को दिया हुआ 'शक्तिपात' है । शक्तिपात का तात्पर्य गुरु के पास जो ज्ञान है, जो साधना की ऊष्मा है, जो साधना की पूर्णता है, उसमें से बहुत कुछ शिष्य को प्रदान कर दिया गया है, यह ऐसा प्रयास है जिसके लिए शिष्य को कुछ करना नहीं होता, अपितु वह अपना खाली पात्र लेकर गुरु के सामने खड़ा हो जाता है, और गुरु प्रत्येक साधना के द्वारा उसके खाली पात्र में सिद्धियां उडेलता रहता है, यह अपने आपमें एक ऐसा प्रयास है, जो पूर्णता के निकट है, क्योंकि गुरु ही एक मात्र पूर्ण है, और उस पूर्ण में से पूर्ण को प्रदान कर दिया जाय तो शिष्य भी अपने आपमें पूर्ण हो जाता है ।

साधना ग्रन्थ अपने आपमें इस प्रकार के उदाहरणों से भरे पड़े हैं, जहां शिष्य ने या साधक ने किसी प्रकार की कोई साधना सम्पन्न नहीं की, किसी प्रकार का कोई मन्त्र जप नहीं किया, किसी प्रकार की कोई पूजा-अर्चना नहीं की, अपितु अपने हृदय में गुरु को पूर्ण रूप से उतारने की क्रिया ही सम्पन्न की, इन दीक्षाओं के माध्यम से अपने जीवन को प्रकाशित करने का ही प्रयत्न किया और जब उसने उस गुरु के द्वारा सम्पूर्ण दीक्षाएं क्रमशः प्राप्त कर ली, तो एक दिन अचानक उसने अनुभव किया कि वह जीवन में जिस सिद्धि को प्राप्त करना चाहता था वह तो उसके सामने खड़ी है, वह जीवन में जो कुछ प्राप्त करना चाहता था वह उसे अनायास मिल गयी है, यह गुरु की तरफ से शिष्य को अपूर्व भेंट और श्रेष्ठ वरदान है ।

और यही तो शिष्य चाहता है, सही अर्थों में कहा जाय तो गुरु भी यही चाहता है, पर इसके लिए मन में शिष्यता का भाव होना आवश्यक है, पूर्ण शिष्य बनने के लिए यह जरूरी है, कि उसके हृदय में गुरु के प्रति श्रद्धा हो, गुरु के प्रति समर्पण हो, और गुरु के प्रति भय की भावना हो । श्रद्धा, समर्पण और भय इन तीनों तत्वों से मिल कर ही शिष्य या साधक का निर्माण होता हैं जिसमें इन तीनों में से कोई कमी रह जाती है, वह न तो पूर्ण शिष्य बन सकता है और न किसी प्रकार की दीक्षा प्राप्त हो कर सकता है ।

इसीलिए तो शास्त्रों में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि यह सबसे सरल और कठिन रास्ता है, पर फिर भी दूसरी साधनाओं की अपेक्षा ज्यादा महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके माध्यम से ही शिष्य अपने आपको पूर्णता के साथ गुरु के हृदय में स्थापित कर सकता है और जब शिष्य अपने आपको गुरु के हृदय में स्थापित कर लेता है तो गुरु तो स्वतः ही उसके हृदय में स्थापित हो जाते हैं और उसके हृदय में गुरु स्थापित होने का तात्पर्य है सम्पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति, उसके हृदय में गुरु के स्थापित होने का तात्पर्य है सम्पूर्ण साधनाओं की सिद्धि, और उसके हृदय में गुरु के स्थापित होने का तात्पर्य है जीवन में पूर्णता प्राप्त करने की क्रिया सम्पूर्णता, श्रेष्ठता और सफलता ।

और यही वो रास्ता है, जिस पर चल कर शिष्य वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है, जो उसके जीवन का पाथेय होता है, जो उसका लक्ष्य होता है, जो उसका चिन्तन और कार्य होता है, वह जीवन में यही तो चाहता है, वह जीवन में चाहता है कि दस महाविद्याओं को सिद्ध करूं, कुण्डलिनी जाग्रत करूं, क्रिया योग की पूर्णता प्राप्त करूं, और ब्रह्माण्ड के उन रहस्यों को ज्ञात करूं जो रहस्य के गर्भ में हैं ।

और इन सब को प्राप्त करने के लिए यह जीवन अत्यन्त छोटा सा है इस छोटे से जीवन में सबसे सरल और सुगम रास्ता यह है कि वह इन दस दीक्षाओं की सीढ़ियों पर क्रमशः चढ़ता हुआ, पूर्णता तक पहुंच जाय और उस अन्तिम सत्य का साक्षात्कार कर ले जिसे पूर्णमदः पूर्णमिदम् कहा गया है । ●

सिद्धाश्रम पंचांग

(१९९२)

दिनांक	मिति	वार	पर्व
४-४-९२	चैत्र शुक्ल १	शनिवार	नवरात्रि प्रारम्भ
६-४-९२	चैत्र शुक्ल ३	सोमवार	शिव गौरी जयन्ती
१०-४-९२	चैत्र शुक्ल ८	शुक्रवार	दुर्गा अष्टमी
११-४-९२	चैत्र शुक्ल ९	शनिवार	श्री रामनवमी
१३-४-९२	चैत्र शुक्ल ११	सोमवार	कामदा एकादशी
१४-४-९२	चैत्र शुक्ल १२	मंगलवार	अनंग सिद्धि दिवस
१५-४-९२	चैत्र शुक्ल १३	बुधवार	महावीर जयन्ती
१७-४-९२	चैत्र शुक्ल १५	शुक्रवार	हनुमान जयन्ती
२१-४-९२	वैसाख कृष्ण ४	मंगलवार	गुरुदेव जन्म दिवस
२२-४-९२	वैसाख कृष्ण ५	बुधवार	वसुंधरा जयन्ती
२८-४-९२	वैसाख कृष्ण ११	मंगलवार	वरुथिनी एकादशी
२-५-९२	वैसाख कृष्ण ३०	शनिवार	देवपितृकार्य अमावस्या
३-५-९२	वैसाख शुक्ल १	रविवार	श्री पारासर जयन्ती
५-५-९२	वैसाख शुक्ल ३	मंगलवार	अक्षय तृतीया, परशुराम जयन्ती
७-५-९२	वैसाख शुक्ल ५	गुरुवार	शंकराचार्य जयन्ती
१२-५-९२	वैसाख शुक्ल ११	मंगलवार	मोहिनी वशीकरण सिद्धि दिवस
१३-५-९२	वैसाख शुक्ल १२	बुधवार	अप्सरा सिद्धि दिवस
१५-५-९२	वैसाख शुक्ल १४	शुक्रवार	श्रीनृसिंह जयन्ती
२८-५-९२	ज्येष्ठ कृष्ण ११	गुरुवार	अपरा सिद्धि दिवस
३०-५-९२	ज्येष्ठ कृष्ण १३	शनिवार	शनि जयन्ती
१-६-९२	ज्येष्ठ कृष्ण ३०	सोमवार	सोमवती अमावस्या
७-६-९२	ज्येष्ठ शुक्ल ७	रविवार	काल सिद्धि दिवस
९-६-९२	ज्येष्ठ शुक्ल ९	मंगलवार	शिव सिद्धि दिवस
१०-६-९२	ज्येष्ठ शुक्ल १०	बुधवार	बटुक भैरव जयन्ती
१५-६-९२	ज्येष्ठ शुक्ल १५	सोमवार	सावित्री सौभाग्य जयन्ती

दिनांक	मिति	वार	पर्व
२६-६-९२	अषाढ़ कृष्ण ११	शुक्रवार	योगिनी सिद्धि दिवस
२-७-९२	अषाढ़ शुक्ल २	गुरुवार	विष्णु सिद्धि दिवस
८-७-९२	अषाढ़ शुक्ल ९	बुधवार	कामाक्षी सिद्धि दिवस
१४-७-९२	अषाढ़ शुक्ल १५	मंगलवार	श्री गुरु पूर्णिमा
१६-७-९२	श्रावण कृष्ण २	गुरुवार	शून्य सिद्धि जयन्ती
२०-७-९२	श्रावण कृष्ण ५	सोमवार	नागपंचमी
२६-७-९२	श्रावण कृष्ण ११	रविवार	कामदा एकादशी
२९-७-९२	श्रावण कृष्ण १३	बुधवार	हरियाली अमावस्या
१-८-९२	श्रावण शुक्ल ३	शनिवार	मधुश्रवा जयन्ती
१-८-९२	श्रावण शुक्ल ३	शनिवार	सुवर्णा गौरी सिद्धि दिवस
२-८-९२	श्रावण शुक्ल ४	रविवार	वरदविनायक सिद्धि दिवस
८-८-९२	श्रावण शुक्ल ११	शनिवार	भाग्योदय साधना
१३-८-९२	श्रावण शुक्ल १५	गुरुवार	गायत्री सिद्धि दिवस, रक्षा बन्धन
१७-८-९२	भाद्रपद कृष्ण ४	सोमवार	श्री सिद्धि दिवस, बहुला चौथ
२१-८-९२	भाद्रपद कृष्ण ८	शुक्रवार	कृष्ण जन्माष्टमी
२७-८-९२	भाद्रपद कृष्ण १४	गुरुवार	अघोर सिद्धि श्मशान साधना दिवस
३०-८-९२	भाद्रपद शुक्ल ३	रविवार	सौभाग्य सिद्धि दिवस
१-९-९२	भाद्रपद शुक्ल ५	मंगलवार	ऋषि पंचमी, ब्रह्मर्षि जयन्ती
२-९-९२	भाद्रपद शुक्ल ६	बुधवार	पराक्रम सिद्धि दिवस
१०-९-९२	भाद्रपद शुक्ल १४	गुरुवार	अनंत चतुर्दशी
१२-९-९२	भाद्रपद शुक्ल १५	शनिवार	श्राद्ध प्रारम्भ
१६-९-९२	आश्विन कृष्ण ४	बुधवार	विश्वकर्मा जयन्ती
२६-९-९२	आश्विन कृष्ण ३०	शनिवार	शनैश्चरी अमावस्या
२७-९-९२	आश्विन कृष्ण १	रविवार	शारदीय नवरात्रि
३०-९-९२	आश्विन शुक्ल ५	बुधवार	उपांग ललिता सिद्धि दिवस
६-१०-९२	आश्विन शुक्ल १०	मंगलवार	विजयादशमी पूजा
७-१०-९२	आश्विन शुक्ल ११	बुधवार	पापमोचनी एकादशी
११-१०-९२	आश्विन शुक्ल १५	रविवार	शरद पूर्णिमा
१९-१०-९२	कार्तिक कृष्ण ८	सोमवार	आद्या सिद्धि दिवस
२२-१०-९२	कार्तिक कृष्ण ११	गुरुवार	रमा जयन्ती
२३-१०-९२	कार्तिक कृष्ण १२	शुक्रवार	धनत्रयोदशी
२४-१०-९२	कार्तिक कृष्ण १३	शनिवार	धनवन्तरी जयन्ती, रूप सिद्धि दिवस
२५-१०-९२	कार्तिक कृष्ण ३०	रविवार	दीपावली महालक्ष्मी पूजन
३०-१०-९२	कार्तिक शुक्ल ५	शुक्रवार	सर्वसौभाग्य प्राप्ति जयन्ती
३१-१०-९२	कार्तिक शुक्ल ६	शनिवार	सूर्य सिद्धि दिवस

दिनांक	मिती	वार	पर्व
३-११-९२	कार्तिक शुक्ल ९	मंगलवार	तन्त्र सिद्धि दिवस
१७-११-९२	मार्गशीर्ष कृष्ण ८	मंगलवार	कालभैरव अष्टमी
२०-११-९२	मार्गशीर्ष कृष्ण ११	शुक्रवार	मायामोहिनी एकादशी
३०-११-९२	मार्गशीर्ष शुक्ल ६	सोमवार	त्रिपुर सुन्दरी सिद्धि दिवस
६-१२-९२	मार्गशीर्ष शुक्ल ११	रविवार	मोक्षदा एकादशी
८-१२-९२	मार्गशीर्ष शुक्ल १३	मंगलवार	भूत-पिशाच सिद्धि दिवस
९-१२-९२	मार्गशीर्ष शुक्ल १४-१५	बुधवार	चन्द्र ग्रहण
१३-१२-९२	पौष कृष्ण ४	रविवार	बगलामुखी सिद्धि दिवस
१६-१२-९२	पौष कृष्ण ७	बुधवार	छिन्नमस्ता अष्टमी
२०-१२-९२	पौष कृष्ण ११	रविवार	भाग्यबाधा निवारण जयन्ती
३१-१२-९२	पौष शुक्ल ७	गुरुवार	श्री शक्ति सिद्धि दिवस

पुष्य नक्षत्र—१९९२

दिनांक	मिति	वार	समय
१६-२-९२	माघ शुक्ल १३	रविवर	प्रातः ११।१२ से
१७-२-९२	,, १४	सोमवार	प्रातः ७।१३ तक
१४-३-९२	फाल्गुन शुक्ल १०	शनिवार	शाम ८।१८ से
१५-३-९२	,, ११	रविवार	शाम ५।४६ तक
१०-४-९२	चैत्र शुक्ल ८	शुकवार	रात २।१० से
११-४-९२	,, ९	शनिवार	रात १२।३४ तक
८-५-९२	वैसाख शुक्ल ६	शुक्रवार	प्रातः ७।४९ से पूरी रात
४-६-९२	ज्येष्ठ शुक्ल ४	गुरुवार	दोपहर १२।५८ से
५-६-९२	,, ५	शुक्रवार	दोपहर ११।५ तक
१-७-९२	आषाढ़ शुक्ल १	बुधवार	रात ९।५७ से
२-७-९२	,, २	गुरुवार	शाम ७।१४ तक
२९-७-९२	श्रावण कृष्ण ३०	बुधवार	प्रातः ८।५५ से पूरी रात
२५-८-९२	भाद्रमद कृष्ण १२	मंगलवार	रात ७।४५ से
२६-८-९२	,, १३	बुधवार	शाम ५।८ तक
२१-९-९२	आश्विन कृष्ण ९	सोमवार	रात ४।५३ से
२२-९-९२	,, १०	मंगलवार	रात २।४५ तक
१९-१०-९२	कार्तिक कृष्ण ८	सोमवार	प्रातः ११।१ से
२०-१०-९२	,, ९	मंगलवार	प्रातः ९।५० तक
१५-११-९२	मांर्गशीर्श शुक्ल ५	रविवार	शाम ४।४८ से
१६-११-९२	,, ६	सोमवार	अपराह्न ३।४२ तक
१२-१२-९२	पौष कृष्ण ३	शनिवार	रात १२।०० से
१३-१२-९२	,, ४	रविवार	रात १०।०० तक

शुभ कार्य सम्पादन हेतु

चौघड़ियां मुहूर्त

हर व्यक्ति के लिए सप्ताह का कोई विशेष दिन शुभ होता है, और कोई दिन अशुभ, शुभ समय में किये हुए कार्य में लाभ तत्काल प्राप्त होता है, कार्य इच्छानुसार पूर्ण होते हैं, मुहूर्त शास्त्र के अन्तर्गत दिन को आठ भागों में बांटा गया है, इसे चौघटिका वेला कहा गया है इसके अनुसार सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय को आठ भाग कर उसके अनुसार गणना करने से चौघटिका बनती है, चौघटिका के सात रूप हैं, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चंचल तथा काल, इनमें अमृत, शुभ तथा लाभ के तीन चौघड़ियां कार्य सिद्धि हेतु उत्तम मानी गयी हैं, रोग और काल के चौघड़ियों में कार्य विपरीत होता है तथा उद्वेग तथा चंचल की चौघड़ियां चिन्ता बढ़ाते हुए कार्य सम्पन्न करती हैं, पत्रिका सदस्यों हेतु सूर्योदय तथा सूर्यास्त का अनुमानित समय ६ बजे मानते हुए यह विशेष सारिणी वार क्रम के अनुसार दी जा रही है, अपने स्थान के सूर्योदय के हिसाब से इस गणना में परिवर्तन कर लाभ शुभ का निर्णय किया जा सकता है। ●

दिन की चौघड़ियां

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग ६से	अमृत ६ ।	रोग ६से	लाभ ६से	शुभ ६से	चंचल ६से	काल ६से
चंचल ७।३०से	काल ७।३०से	उद्वेग ७।३०से	अमृत ७।३०से	रोग ७।३०से	लाभ ७।३०से	शुभ ७।३०से
लाभ ९से	शुभ ९से	चंचल ९से	काल ९से	उद्वेग ९से	अमृत ९से	रोग ९से
अमृत १०।३०से	रोग १०।३०से	लाभ १०।३०से	शुभ १०।३०से	चंचल १०।३०से	काल १०।३०से	उद्वेग १०।३०से
काल १२से	उद्वेग १२से	अमृत १२से	रोग १२से	लाभ १२से	शुभ १२से	चंचल १२से
शुभ १।३०से	चंचल १।३०से	काल १।३०से	उद्वेग १।३०से	अमृत १।३०से	रोग १।३०से	लाभ १।३०से
रोग ३से	लाभ ३से	शुभ ३से	चंचल ३से	काल ३से	उद्वेग ३से	अमृत ३से
उद्वेग ४।३०से	अमृत ४।३०से	रोग ४।३०से	लाभ ४।३०से	शुभ ४।३०से	चंचल ४।३०से	काल ४।३०से

रात की चौघड़ियां

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ ६से	चंचल ६से	काल ६से	उद्वेग ६से	अमृत ६से	रोग ६से	लाभ ६से
अमृत ७।३०से	रोग ७।३०से	लाभ ७।३०से	शुभ ७।३०से	चंचल ७।३०से	काल ७।३०से	उद्वेग ७।३०से
चंचल ९से	काल ९से	उद्वेग ९से	अमृत ९से	रोग ९से	लाभ ९से	शुभ ९से
रोग १०।३०से	लाभ १०।३०से	शुभ १०।३०से	चंचल १०।३०से	काल १०।३०से	उद्वेग १०।३०से	अमृत १०।३०से
काल १२से	उद्वेग १२से	अमृत १२से	रोग १२से	लाभ १२से	शुभ १२से	चंचल १२से
लाभ १।३०से	शुभ १।३०से	चंचल १।३०से	काल १।३०से	उद्वेग १।३०से	अमृत १।३०से	रोग १।३०से
शुभ ४।३०से	चंचल ४।३०से	काल ४।३०से	उद्वेग ४।३०से	अमृत ४।३०से	रोग ४।३०से	लाभ ४।३०से

शिव

साधना सिद्धि सम्पूर्णता

महाशिवरात्रि—अमृत पर्व

अमोघ लक्ष्मी प्रदायक शिवाभिषेक साधना

यों तो भारतवर्ष में सैकड़ों व्रत, उपवास और महोत्सव हैं, और सैकड़ों दिवस ऐसे हैं जब उत्सव समारोह या साधना सम्पन्न की जाती है, परन्तु पूरे वर्ष में केवल तीन विशिष्ट रात्रियों का ही वर्णन-विधान शास्त्रों में आया है—

१-कालरात्रि, २-महारात्रि और ३-शिवरात्रि ।

दीपावली की रात्रि को 'कालरात्रि' कहा जाता है, जब पूरा भारतवर्ष उस रात्रि को भगवती महालक्ष्मी का पूजन-अर्चन सम्पन्न करता है और जीवन में सुख सौभाग्य, धन आदि की कामना करता है, नवरात्रि अर्थात् आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक को 'महारात्रि' कहा जाता है, और इन दिनों में भी उच्चकोटि के साधक रात्रि को ही भगवती दुर्गा से सम्बन्धित साधना सम्पन्न करते हैं और यश आदि सम्पन्न कर जीवन की पूर्णता प्राप्त करते हैं, इनसे भी ज्यादा महत्व **'शिवरात्रि'** का है, जो कि देवताओं के भी देव, महादेव से सम्बन्धित रात्रि है, जन्म-जन्म की दरिद्रता, अभाव, दुःख-दैन्य, कष्ट, पीड़ा और अकाल मृत्यु को समाप्त करने में समर्थ है, शास्त्रों के अनुसार जो पूरे विधि-विधान के साथ इस महाशिवरात्रि पर्व पर भगवान शिव की आराधना, पूजन अर्चन सम्पन्न करता है, उसके जीवन की प्रत्येक इच्छा अवश्य ही पूर्ण होती है, शिव पुराण के अनुसार ऐसा हो ही नहीं सकता कि शिवरात्रि के पर्व पर साधना की जाय और साधक की मनोकामना पूर्ण न हो ।

मेरे स्वयं के अनुभव में यह आया है कि शिवरात्रि अपने आपमें ही पुण्यदायक साधना-पर्व है, अन्य अवसरों दिनों या पर्वों पर साधना करने से मनोनुकूल सफलता मिले या न मिले, परन्तु शिवरात्रि के अवसर पर सम्पन्न की जाने वाली साधना में अवश्य ही पूर्णता और सफलता प्राप्त

होती है, इसीलिए तो किसी भी मत का कोई भी साधक चाहे वह शाक्त हो या शैव, वैष्णव हो अथवा किसी अन्य मत का, प्रत्येक मत का साधक इस शिवरात्रि से सम्बन्धित साधना अवश्य ही सम्पन्न करता है, जिससे कि उसके जीवन के सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं।

महाशिवरात्रि पर्व

इस बार यह शिवरात्रि २-३-९२ को सम्पन्न हो रही है, जो कि अपने आपमें अत्यन्त शुभ योगों से सम्पन्न है, कहते हैं कि यदि पंचकों में कोई साधना की जाय तो उसका पांच गुना फल प्राप्त होता है, इस बार यह शिवरात्रि पंचकों में समाविष्ट है और धनिष्ठा नक्षत्र पर आरूढ़ होने से पूर्ण धनदायक बन गयी है, इसके अलावा कुम्भ का चन्द्रमा पूर्णता का द्योतक है, अतः इस अवसर पर साधना सम्पन्न करना ही जीवन की पूर्णता, सफलता और श्रेष्ठता है।

अमोघ लक्ष्मी प्रदायक शिवाभिषेक साधना

मैं जब आठ वर्ष का था तभी मेरे पिताजी ने मेरा यज्ञोपवीत संस्कार कर दिया था, मेरे पिता स्वयं शिव-भक्त थे, और उनके जीवन में लक्ष्मी की कोई न्यूनता नहीं रही थी, मुझे याद है कि एक बार मेरे पिताजी किसी संन्यासी के साथ लगभग छः महीने घर से बाहर रहे थे, यह संन्यासी शिव-साधना के मूर्तिमन्त स्वरूप थे, उन्होंने मेरे पिताजी को एक अद्वितीय अपूर्व दुर्लभ अलौकिक लक्ष्मी प्रदायक शिव साधना सम्पन्न करवाई थी, इस साधना के सम्पन्न करने के बाद हमारे घर में अकस्मात् लक्ष्मी आती ही रही, और हमारे पूरे परिवार को पूरे जीवन काल में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहा।

मैं जब ३६ वर्ष का हुआ तब पिताजी ने इस साधना का रहस्य मेरे सामने स्पष्ट करते हुए कहा कि यह जीवन की अद्वितीय अपूर्व साधना है, जिसके माध्यम से निम्न

सभी प्रकार की लक्ष्मियों की प्राप्ति निश्चित है—

१-अकाल मृत्यु निवारण लक्ष्मी, २-पूर्ण परिवार में स्वास्थ्य एवं दीर्घायु प्राप्ति लक्ष्मी, ३-कुटुम्ब रक्षा और गृह कलह निवारण लक्ष्मी, ४-संतान प्राप्ति एवं पुत्र-पुत्री सौभाग्य लक्ष्मी, ५-शत्रु दमन लक्ष्मी, ६-पूर्ण गृहस्थ सुख सौभाग्य लक्ष्मी, ७-प्रबल भाग्योदय लक्ष्मी और ८-मनोकामना पूर्ति लक्ष्मी।

इन आठों लक्ष्मियों की प्राप्ति इस साधना के द्वारा ही संभव है, और इसके बाद जीवन में किसी प्रकार की कोई न्यूनता या अभाव नहीं रहता, वह अपने जीवन में जो कुछ भी और जैसा भी चाहता है, वह कार्य अवश्य ही सम्पन्न होता है।

कुबेर द्वारा सम्पन्न शिव साधना

पिताजी ने इस साधना का रहस्य स्पष्ट करते हुए बताया था कि वैदिक काल में कुबेर ने स्वयं भगवान शिव की इसी साधना को अपना कर अतुलनीय धन वैभव और प्रतिष्ठा प्राप्त की थी, आगे चल कर पौराणिक काल में **रावण** ने स्वयं इसी साधना को सम्पन्न कर अपनी नगरी लंका को पूर्ण रूप से स्वर्णमयी बना दिया था और राम के राज्याभिषेक के बाद **महर्षि वशिष्ठ** ने इसी साधना को **भगवान राम** से सम्पन्न करवाया, जिससे कि यह राज्य ही **राम राज्य** कहलाया, जिसकी चर्चा प्रशंसा आज भी करते हैं, आगे चलकर **भीष्म** ने, **कृपाचार्य** ने, यहां तक कि **भगवान श्रीकृष्ण** ने भी महाभारत युद्ध से पूर्व शिवरात्रि के पर्व पर शत्रु विजय एवं युद्ध में सफलता की कामना करते हुए यही साधना सम्पन्न की थी।

ऐसा पर्व तो वर्ष में केवल एक बार आता है, और यह साधना शिवरात्रि पर्व पर ही सम्पन्न की जा सकती है, लक्ष्मी प्राप्ति, आकस्मिक लक्ष्मी प्राप्ति, ऋण निवारण और अखण्ड सौभाग्य प्राप्त भाग्योदय तथा मनः इच्छा पूर्ति के लिए यह साधना सर्वोपरि एवं अद्वितीय है।

साधना एवं साधना सामग्री

मेरे पूज्य पिताजी ने उस संन्यासी जी से प्राप्त इस साधना को सम्पन्न कर जिस प्रकार से फिर मुझे सम्पन्न कराई, और जिसकी वजह से मेरे जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त हुई है, मैं उसी साधना को गोपनीय न रखते हुए इस वृद्धकाल में सभी साधकों के समक्ष उस साधना का रहस्य स्पष्ट कर रहा हूं।

इस साधना हेतु साधना सामग्री में निम्न आठ वस्तुएं होनी आवश्यक हैं—१-लक्ष्मी प्रदायक महादेव यन्त्र, २-पांच एकमुखी मधुरूपेण रुद्राक्ष, ३-लक्ष्मी यन्त्र, ४-कुबेर सिद्धिप्रदायक शिवलिंग विग्रह, ५-तांत्रोक्त सिद्धि-प्रदायक शिव सायुज्य, ६-अखण्ड सिद्धि एवं मनोनुकूल कार्य सिद्धि प्रदायक सियार सिंगी, ७-प्रबल भाग्योदय कारक लक्ष्मी यन्त्र, ८-शिव पंचानन यन्त्र।

इनमें से प्रत्येक वस्तु दुर्लभ एवं मन्त्र सिद्ध होनी चाहिए और **रावणकृत शिव सायुज्य मन्त्रों** से सिद्ध सम्पुटित होनी चाहिए, इसके अलावा साधना काल में जल पात्र, केसर, सुपारी, नारियल, घी का दीपक, पुष्प मालाएं, यदि सम्भव हो तो आक के पत्ते, बिल्व पत्र, आदि पहले से ही मंगा कर रख लें।

साधना क्रम

साधक को चाहिए कि शिवरात्रि के दिन व्रत रखें और अन्न ग्रहण न करें, उस दिन साधक भगवान शिव के चिन्तन में ही रहें, रात्रि को स्नान कर शुद्ध सफेद आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने एक पात्र में उपरोक्त आठों वस्तुओं को रख दें, फिर दूसरे पात्र में केसर से स्वस्तिक बनाएं और स्वस्तिक के ऊपर केसर की ग्यारह बिन्दियों पर एक-एक सुपारी स्थापित कर दें, इन्हें **एकादश रुद्राक्ष** कहा जाता है, फिर इसके बाद इन सभी ग्यारह सुपारियों के सामने एक-एक दीपक लगाएं जिसमें शुद्ध घी का प्रयोग किया जाय, इससे पहले पूजा काल में यदि संभव हो तो **भगवान शिव का चित्र** मंगवा कर सामने स्थापित कर दें।

पारद शिवलिंग

जिस घर में **पारद शिवलिंग** स्थापित होता है, उस घर में शिव-कृपा और शिव-शक्ति-लक्ष्मी का सदा वास रहता है, पारदेश्वर शिवलिंग की महिमा तो निराली ही है, इस पारद शिवलिंग को, अथवा दूसरे किसी नर्मदेश्वर अथवा कुबेरेश्वर शिवलिंग को किसी पात्र में स्थापित कर दें, फिर जल से स्नान कराकर क्रम से दूध दही, घी, शहद, शक्कर आदि उपरोक्त पांचों पदार्थों को मिलाकर पंचामृत से स्नान कराएं और फिर

शुद्ध जल से स्नान करा दें, यदि आपके घर में गंगाजल हो तो इसके बाद गंगाजल से भगवान शिव को स्नान करा कर विग्रह को पौंछ कर अलग पात्र में स्थापित कर दें, और उस पर केसर से तिलक करें, फिर पास में ही एक सुपारी रख कर उसे मां पार्वती मान कर उसकी पूजा करें, और पास में ही गणपति को स्थापित कर उनकी पूजा करें, घर में यदि गणपति विग्रह नहीं हो तो एक अन्य सुपारी को ही गणपति मान कर उसकी पूजा की जा सकती है।

इसके बाद भगवान शिव पर यदि सम्भव हो तो २१ बिल्व पत्र चढ़ावें यदि बिल्व पत्र नहीं हो तो किसी प्रकार के भी पुष्प एक-एक करके चढ़ा सकते हैं, या आक के पत्ते उन्हें चढ़ा सकते हैं, प्रत्येक बिल्व पत्र या पुष्प चढ़ाते समय निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—

बिल्व पत्र मन्त्र

।। ॐ वर सायुज्य बिल्व पत्राय नमः ।।

इसके बाद भगवान शिव की विधि-विधान के साथ आरती करें, इसके बाद भगवान शिव को भोग लगावें, और फिर पात्र में जो आठ वस्तुएं रखी हुई हैं, उन सब की सामान्य पूजा सम्पन्न करें।

इसके बाद **रुद्राक्ष माला** से निम्न अमोघ लक्ष्मी प्रदायक शिव सायुज्य मन्त्र की २१ माला या ५१ माला अथवा १०८ माला मन्त्र जप करें, यद्यपि पूर्ण विधान तो १०८ माला का है, परन्तु शास्त्रों में विधान है कि यदि किसी कारणवश १०८ माला मन्त्र जप न कर सकें, तो २१ या ५१ माला मन्त्र जप भी कर सकते हैं।

अमोघ लक्ष्मी प्रदायक शिव सायुज्य मन्त्र

।। ॐ सिद्धि लक्ष्मी प्रदाय नमः शिवाय ॐ ।।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तो एक बार पुनः भगवान शिव की आरती करें, तत्पश्चात् प्रसाद ग्रहण करें, इस प्रकार यह अद्वितीय साधना सम्पन्न होती है जो कि केवल शिवरात्रि को ही सम्पन्न की जा सकती है।

दूसरे दिन प्रातःकाल उपरोक्त आठों वस्तुओं को किसी पात्र में रख कर या तो पूजा स्थान में ही रहने दें अथवा घर में किसी अन्य स्थान पर इनको रख दे. जब तक ये वस्तुएं घर में रहेंगी, तब तक जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण उन्नति होती रहेगी, और जीवन में समस्त प्रकार के मनोवांछित कार्य सम्पन्न होते रहेंगे।

इसके अतिरिक्त शिव साधना के कुछ और भी 'विशेष मन्त्र' हैं, जिनका अपने कार्य के अनुसार प्रयोग करना चाहिए —

१ **'ॐ नमः शिवाय'**, यह सुख और सौभाग्य प्रदान करने वाला मूल शिव मन्त्र है, इसकी पांच माला प्रतिदिन जप करना चाहिए।

२-**'ह्रीं ॐ नमः शिवाय ह्रीं'** यह अष्टाक्षर शिवमन्त्र शत्रु बाधा निवारण व भय नाशक मन्त्र है।

३-**'रं क्षं मं यं ऑं अं'** यह सर्व सिद्धि प्रदायक गृहस्थ सुख-शान्ति, संतान प्राप्ति शिव मन्त्र है।

महामृत्युंजय मन्त्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

शिवरात्रि की यह महान साधना अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए, और योग्य साधक को नित्य प्रति शिव-पूजा और ध्यान अवश्य करना चाहिए, जो साधक शिव-रात्रि की साधना को चूक जाते हैं वे एक बहुत बड़े सौभाग्य से वंचित रह जाते हैं, इस साधना को स्त्री-पुरुष बाल वृद्ध प्रत्येक सम्पन्न कर सकता है। ●

यदि जीवन को इन्द्र के समान ऐश्वर्यमय बनाना चाहते हैं

तो कीजिए

इन्द्रकृत

सिद्ध सहस्र लक्ष्मी प्रयोग

ऐसा दुर्लभ प्रयोग जिसकी महत्ता विश्वामित्र, वशिष्ठ, शंकराचार्य, गुरु गोरखनाथ सबने एक मत से स्वीकार की और प्रत्यक्ष साधना कर अपने अनुभव से अपने पूरे जीवन के लिए लक्ष्मी को आधीन कर लिया—

अभी-अभी पिछले दिनों हिरण्मयवासी तपोनिष्ठ योगीराज शैलन्द्र स्वामी जी से एक अद्भुत और आश्चर्यजनक प्रयोग प्राप्त हुआ है, यदि पाठकों ने शास्त्रों का अध्ययन किया हो, तो उन्हें पता चलेगा कि इन्द्रकृत सहस्र लक्ष्मी प्रयोग सर्वथा गोपनीय और दुर्लभ प्रयोग रहा है, यद्यपि इसकी चर्चा कई ग्रन्थों में आई है, परन्तु इसका विस्तृत वर्णन हमें अभी तक प्राप्त नहीं हुआ था, पत्रिका की टीम इस रहस्य को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील थी, परन्तु इसकी प्रामाणिक विधि और इसका शुद्ध पाठ प्राप्त नहीं हो रहा था, पिछले दिनों कुम्भ के अवसर पर योगीराज शैलेन्द्र स्वामी जी से भेंट हुई और हमें ज्ञात था कि यह विद्या उनके कंठ में सुरक्षित है, हमने उनसे निवेदन किया तो उन्होंने कृपा पूर्वक यह दुर्लभ साधना रहस्य हमें अंकित करवा दिया, इसके लिए पत्रिका स्वामी जी

की आभारी है।

महाविद्या प्रयोग

दस महाविद्याओं के बारे में तो पत्रिका के पाठक पढ़ ही चुके हैं, और उनमें से कई साधकों ने उन प्रयोगों को अपनाया भी है, परन्तु देवताओं के अधिपति इन्द्र ने भगवती लक्ष्मी को भी महाविद्या मान कर उनकी साधना की, और सहस्र रूपेण अर्थात् हजार-हजार रूपों में भगवती लक्ष्मी इन्द्र के निवास में स्थापित हुई और इन्द्र देवताओं में सर्वाधिक सुखी, सर्वाधिक ऐश्वर्य सम्पन्न और सर्वाधिक पूर्णता प्राप्त व्यक्तित्व बने।

भगवती लक्ष्मी की साधना लक्ष्मी के रूप में तो कई स्थानों पर प्रचलित है, परन्तु महाविद्या का रूप देकर इस प्रकार की साधना इन्द्र ने ही स्पष्ट की है, और आगे के सभी ऋषियों ने एक स्वर से यह स्वीकार किया है, कि वास्तव में ही यह साधना अपने आप में शीघ्र फलदायक, निश्चित फलदायक और आश्चर्यजनक रूप से फलदायक है।

सर्वाधिक तेजस्वी मन्त्र

और मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं, कि यह मन्त्र अपने आप में अत्यन्त प्रभावयुक्त है, यद्यपि यह साधना अत्यन्त सरल प्रतीत होती है, परन्तु इसका प्रभाव अपने आप में अचूक है, आगे के ऋषियों ने भी इस साधना को सम्पन्न किया, इतिहास साक्षी है कि **वशिष्ठ** ने साधना को सम्पन्न कर अतुलनीय ऐश्वर्य प्राप्त किया, **विश्वामित्र** ने इस साधना को तन्त्र मान कर सम्पन्न किया, और वे आश्चर्यचकित रह गये कि तन्त्र की अपेक्षा यह जल्द और पूर्णता के साथ सम्पन्न हो सकी, इस साधना के द्वारा भगवती लक्ष्मी साक्षात् जाज्वल्यमान स्वरूप में प्रगट होती ही है, अदृश्य रूप में भी वह साधक के घर में निवास करती है और उसे सभी दृष्टियों से पूर्णता प्रदान करती है, **शंकराचार्य** ने स्वयं इस साधना की बृहद् प्रशंसा की है, और कहा है कि यह साधना कलियुग में गृहस्थ लोगों के लिए कल्पवृक्ष के समान वरदान स्वरूप है, **गुरु गोरखनाथ** ने तो अपने सभी शिष्यों को यह साधना सम्पन्न करने की आज्ञा दी थी, जिससे कि उनके शिष्य दरिद्री नहीं रहें, पूर्ण रूप से सम्पन्न व ऐश्वर्यवान बनें, जिससे कि पूरे विश्व में अपने ज्ञान का सुविधापूर्वक प्रसार कर सकें।

शंकराचार्य के बाद यह साधना एक प्रकार से लुप्त ही हो गई, ग्रन्थों में इस साधना की बारीकियां और इसका प्रभावी प्रामाणिक मन्त्र प्राप्त नहीं हो सका, इसके प्रभाव और इसकी प्रामाणिकता के बारे में प्राचीन काल के ग्रन्थ भरे पड़े हैं।

साधना प्रयोग

यह प्रयोग पुष्य नक्षत्र को किया जाना चाहिए, अगले तीन महीनों में पुष्य नक्षत्र इस प्रकार से घटित होते हैं —

तारीख १४-३-९२ रात ८।१८ से प्रारम्भ तथा तारीख १५-३-९२ सायं ५।४६ तक।

तारीख १०-४-९२ रात २।१० से प्रारम्भ हो कर तारीख ११-४-९२ रात १२।३४ तक।

तारीख ८-५-९२ प्रातः ७।४६ से प्रारम्भ हो कर तारीख ८-५-९२ रात ५।२६ पर समाप्त।

इसके अलावा भी साधक कभी भी पुष्य नक्षत्र का प्रयोग कर सकता है, श्रेष्ठ साधक तो पूरे वर्ष भर प्रत्येक पुष्य नक्षत्र को यह प्रयोग सम्पन्न करते हैं।

साधना सामग्री

इस साधना में पांच पदार्थों की आवश्यकता होती है, जो कि शास्त्र विधि के अनुसार निम्नलिखित हैं—

१-पूर्णता के लिए—**तांत्रोक्त नारियल**
२-समृद्धि के लिए—**कल्पवृक्ष फल**

३-सिद्धि के लिए—**बिल्ली की नाल**
४-स्थापन के लिए—**महालक्ष्मी चित्र और**
५-ऐश्वर्य के लिए-**कमल गट्टे की इन्द्र सहस्त्र लक्ष्मी माला**

साधक इन पांचों वस्तुओं को कहीं से भी प्राप्त कर सकता है, पर इस बात का ध्यान रहे कि ये सारी वस्तुएं मन्त्र सिद्ध एवं प्रामाणिक हों।

पत्रिका की यह नीति रही है, कि वह उच्च कोटि के योगियों और पण्डितों से ऐसी दुर्लभ सामग्री प्राप्त कर आप तक पहुंचाने का प्रयास करती ही है, हमने इन पांचों वस्तुओं का समन्वित नाम **"इन्द्रकृत सहस्त्र लक्ष्मी महाविद्या पैकेट"** रखा है जिसमें ये पांचों वस्तु प्रामाणिकता के साथ हैं जिससे साधक इस पैकेट से ये वस्तुएं प्राप्त कर पूर्णता के साथ साधना सम्पन्न कर सकें।

इसके अलावा जलपात्र, केसर, पुष्पों की माला, कुछ खुले पुष्प, नारियल, फल, नैवेद्य, आदि पूजन सामग्री भी पहले से ही साधना कक्ष में या पूजा घर में रख देनी चाहिए।

साधना प्रयोग

जिस दिन साधक को साधना करनी है, उस दिन साधक को स्नान कर पीली धोती धारण करे, स्त्री साधिका हो तो बालों को धो ले और पीठ पर बालों को खुला रखे, यदि चाहें तो पति-पत्नी दोनों आसन पर बैठ कर साथ-साथ साधना सम्पन्न कर सकते हैं।

सबसे पहले साधक पहले से ही प्राप्त महालक्ष्मी चित्र को फ्रेम में मढ़वा कर अपने सामने रख दें और जल से धो कर उस पर केसर की बिन्दी लगावें, सामने नैवेद्य अर्पित करें और फिर लक्ष्मी के चित्र के सामने ही एक चावल की ढेरी बना कर तांबे का छोटा सा कलश जल से भर कर स्थापित करें, और उस पर लाल कपड़ा रख कर उस कपड़े को कलश से बांध दें, फिर उस पर चावलों की ढेरी बनाकर **तांत्रोक्त नारियल, कल्पवृक्ष फल और बिल्ली की नाल** स्थापित कर दें, फिर इनकी संक्षिप्त पूजा करें और पुष्प अर्पित करें, साथ ही साथ इस कलश के सामने पांच घी के दीपक लगायें, जब तक साधना सम्पन्न करें तब तक घी के दीपक लगे रहने चाहिए, जो पुष्पों की माला लाई हुई है, वह साधक स्वयं धारण कर लें, और शास्त्रों में विधान है, कि पहले से ही पान लगा कर मंगवा लेना चाहिए और यह ताम्बूल अर्थात् पान मुंह में ले कर उसे चबाकर फिर उसे थूक दें, तथा मुंह को धो कर मन्त्र प्रयोग प्रारम्भ करें।

मन्त्र प्रयोग

सबसे पहले हाथ में जल ले कर संकल्प करें कि मैं आज पुष्य नक्षत्र के मुहूर्त पर अटूट धन सम्पत्ति, ऐश्वर्य प्राप्त करने के लिए यह दुर्लभ साधना सम्पन्न कर रहा हूं।

तदुपरान्त पुनः हाथ में जल लेकर निम्न विनियोग पढ़ कर जल भूमि पर छोड़ दें—

विनियोग

ॐ अस्य श्री सर्व महाविद्या महारात्रि गोपनीय मन्त्र रहस्याति रहस्यमयी पराशक्ति श्री मदाद्या भगवती सिद्ध लक्ष्मी सहस्राक्षरी सहस्र रूपिणी महाविद्यायाः श्री इन्द्र ऋषि गायत्र्यादि नाना छन्दांसि, नवकोटि शक्तिरूपा श्री मदाद्या भगवति सिद्ध लक्ष्मी देवता श्री मदाद्या भगवती सिद्ध लक्ष्मी प्रसादादखिलेष्टार्थे जपे पाठे विनियोगः ।

मन्त्र जप से पूर्व निम्न महत्वपूर्ण व गोपनीय न्यास अवश्य सम्पन्न करें—

ऋष्यादि-न्यास

श्री इन्द्र ऋषिभ्यां शिरसे नमः ।

गायत्र्यादि नानाछन्देभ्यौ नमः मुखे ।

नवकोटि शक्ति रूपा श्रीमदाद्या भगवती सिद्ध लक्ष्मी प्रसादादखिलेष्टार्थे जपे पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

अंग-न्यास

ॐ श्रीं सहस्रारे ॐ ह्रीं नमः भाले
ॐ क्लीं नमो नेत्रयुगले ॐ ऐं नमो हस्त युगले
ॐ श्रीं नमः हृदये ॐ क्लीं नमः कटौ
ॐ ह्रीं नमः जंघा द्वये ॐ श्रीं नमः पादादि सर्वांगे

उपरोक्त न्यास आदि उच्चारण कर फिर चित्र के सामने भगवती लक्ष्मी को श्रद्धा युक्त प्रणाम कर निम्न महाविद्या मन्त्र का २१ बार उच्चारण करें—

सहस्राक्षरी सिद्ध लक्ष्मी महाविद्या मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौ श्रीं ऐं ह्रीं क्लीं सौः सौः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं जय जय महालक्ष्मी, जगदाद्ये, विजये, सुरासुर त्रिभुवन निदाने, दयांकुरे, सर्व देव तेजो रूपिणी विरंचि संस्थिते, विधि वरदे, सच्चिदानन्दे, विष्णु देहावृते, महा मोहिनी, नित्य वरदान तत्परे, महा सुधाब्धि वासिनि, महा तेजो धारिणि, सर्वाधारे, सर्व कारण कारिणे, अचिन्त्य-रूपे, इन्द्रादि सकल निर्जर सेविते, साम गान गायन, परिपूर्णोदय कारिणी, विजये, जयन्ति, अपराजिते, सर्व सुन्दरि रक्तांशुके, सूर्य कोटि संकाशे, चन्द्र कोटि सुशीतले, अग्निकोटि दहन शीले, यम कोटि वहन शीले, ॐकार नाद बिन्दु रूपिणि, निगमागम भागदायिनि, त्रिदश राज्य दायिनी, सर्व स्त्री रत्न स्वरूपिणि, दिव्य देहिनी, निर्गुणो सगुणे, सद्-सद् रूपधारिणी, सुर वरदे, भक्त त्राण तत्परे, बहु वरदे, सहस्राक्षरे, अयुताक्षरे, सप्त कोटि लक्ष्मी रूपिणि, अनेकलक्ष-लक्ष स्वरूपे अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायिके, चतुर्विंशति मुनि जन संस्थिते, चतुर्दश भुवन भाव विकारणे, गगन वाहिनि, नाना मन्त्र-राज विराजते, सकल सुन्दरीगण सेविते चरणारविन्दे, महात्रिपुर सुन्दरि, कामेश दायिते, करुणा रस कल्लोलिनि, कल्प वृक्षादि स्थिते, चिन्तामणि द्वय मध्यावस्थिते, मणि मन्दिरे निवासिनी, विष्णु वक्षस्थल कारिणे, अजिते, अमिले, अनुपम चरिते, मुक्ति क्षेत्राधिष्ठा-यिनी, प्रसीद प्रसीद, सर्व मनोरथान पूरय पूरय, सर्वारिष्टान छेदय छेदय, सर्व ग्रह पीड़ा ज्वराग्र भयं विध्वसय विध्वंसय, सर्व त्रिभुवन जातं वशय वशय, मोक्ष मार्गाणि दर्शय दर्शय, ज्ञान मार्ग प्रकाशय प्रकाशय, अज्ञान तमो नाशय नाशय, धन धान्यादि वृद्धि कुरु कुरु, सर्व कल्याणानि कल्पय कल्पय, मां रक्ष रक्ष, सर्वापद्भ्यो निस्तारय निस्तारय, वज्र शरीरं साधय साधय ह्रीं क्लीं सहस्राक्षरी सिद्ध लक्ष्मी महा विद्यायै नमः ।

पाठक स्वयं इस मन्त्र को पढ़ें और देखें कि यह मन्त्र कितना अधिक तेजस्वी और महत्वपूर्ण है, इस दिन केवल २१ बार इस मन्त्र का उच्चारण करना है, मन्त्र जप पूरा होने पर साधक तांत्रोक्त नारियल, कल्पवृक्ष फल और बिल्ली की नाल को सुरक्षित रख दें, यदि साधक की कोई दुकान या फैक्टरी हो तो वहां पर भी जल छिड़क दें, कलश के ऊपर जो चावल रखे हुए थे, वे घर में रखे हुए धान्य में मिला दें, माला को पहने रहें या पूजा स्थान में रख दें। ●

तांत्रोक्त साधनाओं का सिद्ध पर्व

होली

ध्यान रहे इस बार चूक न जाएं

जब परा-अपरा साधक के वश में हो सकती है

होली को सभी साधनात्मक ग्रन्थों में श्रेष्ठ माना गया है, यह पर्व वर्ष में एक बार आता है परन्तु साधकों को इस पर्व की प्रतीक्षा पूरे वर्ष भर रहती है, **मकरन्द संहिता** में बताया गया है कि होली की रात्रि को साधना सम्पन्न करने पर निश्चय ही कार्य सिद्धि होती है, **गोरक्ष संहिता** में स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि जो साधना में पूर्ण सफलता श्रेष्ठता और सिद्धि प्राप्त करना चाहता है, उसे होली जैसे महत्वपूर्ण पर्व को व्यर्थ ही नहीं गंवाना चाहिए क्योंकि यह पर्व तो पूरे वर्ष में एक बार ही आता है और इस अवसर पर साधना करने से अवश्य ही सिद्धि प्राप्त होती है, **रुद्रयामल तन्त्र** में कहा गया है कि यदि होली की रात्रि को किसी भी प्रकार की तांत्रिक साधना सम्पन्न की जाय तो उसे अवश्य ही सिद्धि मिलती है, **विरुपाक्ष संहिता** में तो स्पष्ट रूप से बताया गया है कि संसार में ऐसी कोई साधना नहीं है जो होली की रात्रि को सिद्ध नहीं हो सकती।

उपरोक्त कथनों एवं उदाहरणों से यह तो भली भांति स्पष्ट है कि होली के पर्व का साधना के क्षेत्र में विशेष महत्व है और उच्चकोटि के योगी, यति, संन्यासी और साधक इस दिन की प्रतीक्षा करते रहते हैं, जिससे कि वे इस पर्व पर साधना सम्पन्न कर पूर्णता और सफलता प्राप्त कर सकें, एक तरफ जहां यह पर्व तांत्रिकों के लिए वरदान तुल्य है वहीं साधकों के लिए भी यह दिन अत्यन्त ही श्रेयस्कर एवं सिद्धिप्रद है, इस दिन साधना सम्पन्न

करने पर सफलता मिलती ही है, और साधक अपना मनोवांछित कार्य सम्पन्न करने में सफलता प्राप्त कर लेता है।

इस वर्ष होली का पर्व

इस वर्ष होली **१८-३-९२** को सम्पन्न हो रही है, इस दिन बुधवार है और पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र से सम्पन्न होने के कारण इस होली का महत्व और अधिक बढ़ गया है साधक इस दिन शाम को **७ बजकर २४ मिनिट** से दूसरे दिन गुरुवार को **प्रातः ६ बजकर ३ मिनिट** तक किसी भी प्रकार की साधना सम्पन्न कर सकते हैं, यह पूरी रात्रि साधना के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

उच्चकोटि के ग्रन्थों में यों तो होली की रात्रि को सम्पन्न किये जाने वाले कई मन्त्र और साधनाएं बताई गई हैं, परन्तु मैं इन विशेष नक्षत्रों से सम्पन्न होने के कारण जो साधनाएं महत्वपूर्ण एवं शीघ्र सिद्धिप्रद हैं, उनको ही स्पष्ट कर रहा हूं।

भूतकाल प्रत्यक्ष दर्शन सिद्धि

यह अपने आपमें महत्वपूर्ण साधना है, एक ऐसी साधना है, जो अपने आपमें सर्वथा गोपनीय रही है, पहली बार इस पत्रिका के माध्यम से इस साधना को प्रकाशित किया जा रहा है, क्योंकि एक तो यह साधना सर्वथा गोपनीय रही और दूसरी यह साधना केवल होली की रात्रि को ही सम्पन्न होती है, इसीलिए यह साधना ज्यादा प्रकाश में नहीं आ सकी।

इस साधना की यह विशेषता है कि होली की रात्रि को यह साधना सम्पन्न करने पर साधक की छठी इन्द्रिय जाग्रत हो जाती है और किसी भी व्यक्ति को देखते ही उसका पूरा-पूरा भूतकाल उसके सामने स्पष्ट हो जाता है, आप स्वयं कल्पना करिये कि यदि साधक को बिना प्रयास के ही किसी व्यक्ति का भूतकाल ज्ञात हो जाय तो उसकी समस्या स्वतः ही काफी हल हो जाती है, एक प्रकार से वह चमत्कारी व्यक्तित्व कहलाने लगता है, वह किसी व्यक्ति को देखते ही यह जान जाता है कि उस व्यक्ति का नाम क्या है, इसके घर का पता क्या है, इसके घर में व परिवार में और कौन-कौन है, इसका भूतकाल कैसा बीता है और यह किस प्रकार के स्वभाव का व्यक्ति है।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में इस विद्या का और साधना का महत्व है, इसके द्वारा हम अपने जीवन को ज्यादा सुरक्षित बना सकते हैं, और आने वाली विपत्तियों को टाल सकते हैं।

साधना उपकरण

इस साधना में निम्न पांच वस्तुओं की जरूरत होती है—

१-भूत यक्षिणी चेटक २-महामालिनी यन्त्र ३-भूत दर्शन सिद्धि गुटिका, ४-सिद्धि निर्माल्य और ५-सियार सिंगी।

इन पांचों बहुमूल्य मन्त्र सिद्धि उपकरणों से सम्बधित पैकेट को **'भूत दर्शन सिद्धि पैकेट'** कहा गया है।

साधना कैसे करें

होली की रात्रि को स्नान कर पीली धोती पहिन लें, सधिकाएं पीली कंचुकी और पीली साड़ी धारण कर लें, अपने सामने किसी पात्र में उपरोक्त पैकेट की पांचों चीजें रख दें और जल से स्नान करा कर उस पर कुंकुम अक्षत चढ़ा दें और पुष्प सर्मपित कर दें फिर तेल का दीपक लगा लें।

स्वयं पीले आसन पर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जांय और हकीक माला या **मूंगा माला** से निम्न मन्त्र की ५१ माला मन्त्र जप करें।

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं ह्लीं ह्लीं फट् ॥

जब मन्त्र जप हो जाय तो उपरोक्त सारी सामग्री किसी स्थान पर रख दें और महामालिनी यन्त्र को लाल धागे में पिरो कर अपनी दाहिनी भुजा पर बांध लें तो भूत दर्शन सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

इसके बाद साधक जब भी किसी पुरुष या स्त्री को देखता है तो उसके दिमाग में तुरन्त विद्युत प्रवाह सा होता है और सामने वाले पुरुष या स्त्री का पूरा भूतकाल स्पष्ट हो जाता है या जब अपने मन में किसी से भी सम्बन्धित प्रश्न जानना चाहता है, तो वह प्रश्न स्पष्ट हो जाता है, उसका उत्तर मिल जाता है।

होली की साबर साधनाएं

यों तो होली की रात्रि को मन्त्रात्मक एव तन्त्रात्मक साधनाएं सम्पन्न की जाती हैं, परन्तु जितना मन्त्र और तन्त्र का प्रभाव है, उतना ही प्रभाव साबर मन्त्रों का भी है, साधक चाहे तो साबर मन्त्रों का उपयोग कर साधनाओं में सिद्धि-सफलता प्राप्त कर सकता है।

साबर साधनाओं का तात्पर्य उन मन्त्रों से है, जो मन्त्र संस्कृत में नहीं लिखे गये हैं अपितु सरल भाषा में स्पष्ट हुए हैं, **गुरु गोरखनाथ** और उसके बाद के आचार्यों ने जनहित में साबर साधनाओं का प्रचलन किया, उन्होंने स्वयं इन साधनाओं को सिद्ध किया, और यह अनुभव किया कि साबर साधनाओं के माध्यम से जीवन में उसी प्रकार से सफलताएं पाई जा सकती है, जिस प्रकार तन्त्र साधना के द्वारा।

यद्यपि ये मन्त्र दिखने में अत्यन्त सरल व सामान्य भाषा में लिखे हुए प्रतीत होते हैं, एक बारगी तो विश्वास नहीं होता कि इन मन्त्रों में इतनी क्षमता है भी कि यह सिद्धि प्रदान कर सकें, परन्तु पिछले तीन हजार वर्षों का इतिहास इस बात का साक्षी है कि अधिकतर योगियों ने साबर साधनाओं को अपनाया और इन साधनाओं के द्वारा उन्होंने विशेष सफलताएं प्राप्त कीं, अधिकतर इनमें ऐसी साधनाएं है जो कम पढ़ा-लिखा साधक स्वयं सम्पन्न कर सकता है और सफलता प्राप्त कर सकता है, इन साधनाओं के लिए किसी विशेष प्रकार के विधि-विधान, पूजन-अर्चन, माला या विशेष मन्त्र जप का प्रयोग नहीं है, अपितु कुछ क्रियात्मक पक्ष है, कुछ प्रयोग है और थोड़ा सा मन्त्र जप है, इस प्रकार प्रयोग और मन्त्र जप करने पर तुरन्त सफलता प्राप्त हो जाती है।

आगे दो विशेष साधनाएं दी जा रही हैं, और ये दोनों साधनाएं पूर्णतः आजमाई हुई सिद्ध साधनाएं हैं, शिव का ध्यान कर इन साबर साधनाओं को करने से सफलता अवश्य ही प्राप्त होती है।

१- व्यापार वृद्धि (कार्य सिद्धि) प्रयोग

यदि आपका व्यापार (**कार्य**) ठीक ढंग से नहीं चल रहा हो, और उसमें बाधाएं आ रही हों या आपके व्यापार (**कार्य**) को किसी ने बांध दिया हो, अथवा दुकान पर ग्राहक नहीं आ रहे हों, और आपकी आमदनी बहुत कम हो गई हो, तो होली की रात्रि को यह प्रयोग किया जा सकता है।

अपने सामने एक हाथ लम्बा सूती लाल कपड़ा बिछा दें, और इस पर काले तिल की ढेरी बना दें, और उस पर एक दीया लगा दें, इस दीये में किसी भी प्रकार का तेल भरा जा सकता है, फिर इस दीपक के सामने सात लौंग, सात इलायची तथा सात लाल मिर्चें रख दें, और दीपक के तेल में एक **सियार सिंगी** डाल दें, जो कि तेल में डूबी हुई रहे।

इसके बाद साधक इस दीपक के सामने हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें, कि यदि किसी ने मेरा व्यापार (**कार्य**) बांध दिया हो, या व्यापार (कार्य) में कोई बाधा हो, तो वह दूर हो जाय, और वापिस व्यापार (कार्य) दिन दूना रात चौगुना फैलने लग जाए।

इसके बाद साधक वहीं पर बैठे-बैठे नीचे लिखे मन्त्र का जप करें।

मन्त्र

।। ॐ हनुमन्त वीर, रखो हद धीर, करो यह काम, वैपार बढ़े, तंतर दूर हो, टूणा टूटे, ग्राहक बढ़े, कारज सिद्ध होय, न होय तो अंजनी की दुहाई ।

जब एक घण्टे तक मन्त्र जप हो जाय, तब दीया बुझा दें, और दीपक, सियार सिंगी, तेल तथा अन्य वस्तुओं के साथ ही वह पोटली बांध दें, और उस पोटली को सड़क के चौराहे पर रख दें जहां पर दो सड़कें आ कर मिलती हों ।

यह पोटली रखने के बाद वापिस अपने घर पर लौट आवें, और हाथ-पैर धो लें, ऐसा करने पर व्यापार (कार्य) से सम्बन्धित बाधाएं अथवा दोष दूर हो जाता है, और दूसरे दिन से ही उसे व्यापार (कार्य) में उन्नति अनुभव होने लगती है, यह अपने आपमें श्रेष्ठ और सफल प्रयोग है ।

वशीकरण प्रयोग

होली की रात्रि को वशीकरण या सम्मोहन प्रयोग भी किया जा सकता हैं, यदि आप किसी को चाहते हैं, और उससे भेंट नहीं हो पाती या वह आपका कहना नहीं मानता, फिर भले ही वह पुरुष या स्त्री हो, चाहे पति या पत्नी अथवा प्रेमी या प्रेमिका, इस प्रयोग को होली की रात्रि को सम्पन्न करने पर निश्चय ही सामने वाले पर वशीकरण प्रयोग सम्पन्न होता है, और उसके मन में तीव्र जिज्ञासा तथा छटपटाहट बनने लगती है; और वह मिलने की कोशिश करता है, और इस प्रकार से हमारा मनोवांछित कार्य सिद्ध हो जाता है ।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है, कि जिसको हम पाना चाहते हैं, उससे वापिस प्रेम उसकी तरफ से होने लगता है, और हमारा कार्य सिद्ध हो जाता है ।

होली की रात्रि को ऐसा प्रयोग करने वाला व्यक्ति एक मिट्टी की हंडिया या कुल्हड़ मंगावे, और उसके अन्दर **वशीकरण यन्त्र** रख दे, इसके साथ ही साथ उस पात्र में एक साबुत हल्दी का टुकड़ा तथा सात काली मिर्च रख दें, और फिर उस बर्तन पर लाल कपड़ा बांध दें, और सामने रख कर नीचे लिखे मन्त्र का एक घण्टे तक मन्त्र जप सम्पन्न करें ।

मन्त्र

ॐ वीर वैताल (अमुक) को मन फेर, मेरे वश में कर, चरणों में पड़े, कहियो करे, सौ ताले तोड़ हाजर होय, कहूं सो होय, ठः ठः फट् ।।

जब एक घण्टा मन्त्र जप हो जाय, तब उस पात्र को स्वयं उठा कर या अपने किसी घर के सदस्य या नौकर से वह पात्र कहीं दूर या घर के बाहर ज़मीन में गाड़ दें, और वापिस आ कर हाथ पैर धो लें ।

ऐसा करने पर वशीकरण प्रयोग सिद्ध हो जाता है, और उसी समय से सामने वाले के मन में ऐसी भावना बलवती होने लगती है, कि हर हालत में मुझे मिलना ही है, उसके मन में छटपटाहट बढ़ती ही जाती है, और यदि उसके मन में क्रोध या अन्य किसी प्रकार का विचार होता है तो वह दूर हो जाता है और वापिस सम्बन्ध सामान्य तथा अनुकूल हो जाते हैं ।

साधना के ये प्रयोग शान्त प्रयोग हैं, होली अपने आप में सिद्ध मुहूर्त है और साधक को उचित समय पर इन साधनाओं को अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए । ●

जलाओ ज्योत सौभाग्य की

क्योंकि

मिटाना है अन्धकार दुर्भाग्य का

इस सौभाग्य पंचमी पर

सौभाग्य उत्सव का विशेष दिवस श्री सौभाग्य पंचमी दिनांक २३-३-९२ को आ रहा है, यह जीवन्त पर्व है, उत्साह, आनन्द, सौभाग्य का साधनात्मक काल है, जो इस विशिष्ट अवसर पर सौभाग्य प्रयोग सम्पन्न कर लेता है, वह अपने स्वयं के लिए, अपने जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण अध्याय अपने हाथ से लिख देता है और अपने दुर्भाग्य को मिटा देता है, साधना का एक महत्वपूर्ण पर्व—

सौभाग्य के क्षण जीवन में बहुत कम बार आते हैं, और जब ये क्षण आएं और व्यक्ति इन महत्वपूर्ण क्षणों को पकड़ ले तो अपने जीवन की दिशा को बदल सकता है क्योंकि जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप दुर्भाग्य है, और जब तक यह दुर्भाग्य रहता है, व्यक्ति का जीवन बड़ा ही कष्टकारक बना रहता है, यह दुर्भाग्य मूलरूप से इन पांच कारणों से बनता है—

१-किसी के द्वारा तांत्रिक प्रयोग कर दिये जाने के फलस्वरूप

२-अशुभ ग्रहों या पाप ग्रहों के फलस्वरूप
३-पितृ दोष की वजह से
४-पूर्व जन्म के पापों की वजह से
५-अपने इस जन्म के कर्मों की वजह से

दुर्भाग्य की वजह से व्यक्ति अपने जीवन में उन्नति नहीं कर पाता, वह परिश्रम तो पूरा करता है, परन्तु उसे अपने जीवन में सुख नहीं मिलता, दुर्भाग्य की वजह से उसे निरन्तर आर्थिक हानि होती रहती है, न तो व्यापार में वृद्धि होती है, और न धन-संचय होता है, इस दुर्भाग्य की वजह से बराबर ऋण बना रहता है, दुर्भाग्य की वजह से व्यक्ति रोग-ग्रस्त, बीमार और अशक्त तो रहता ही है, साथ ही साथ उसे परिवार में भी किसी प्रकार का सुख नहीं मिलता, चारों तरफ से परेशानियां उसे घेरे रहती हैं, वह एक परेशानी को मिटाता है, तो दूसरी स्वतः उपस्थित हो जाती है, इसके अलावा उसे शत्रु-भय और राज्य-भय बराबर बना रहता है।

यही दुर्भाग्य स्त्रियों के लिए भी दुखदायक होता है, दुर्भाग्य की वजह से स्त्री को अपने पीहर में या ससुराल में सुख नहीं मिलता, उसे पति का सुख नहीं मिलता, पति दूसरी स्त्री में अनुरक्त हो जाता है, जिसकी वजह से उसे पत्नी के रूप में जो सुख मिलना चाहिए, वह नहीं मिल पाता, स्वास्थ्य बराबर कमजोर बना रहता है, और उसे नित्य नई व्याधियां और तनाव प्राप्त होते रहते हैं, दुर्भाग्य की वजह से ही स्त्री को विधवा जीवन व्यतीत करने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

इन्हीं सब तथ्यों को ध्यान में रख कर हमारे शास्त्रों में सौभाग्य प्रयोग सम्पन्न करने का उपक्रम रखा गया, और वह विधि ढूंढ़ निकाली जिसकी वजह से दुर्भाग्य की काली छाया पुरुष या स्त्री के जीवन पर न पड़े, उसके सभी पाप और दोष इस प्रयोग से समाप्त हो सकें, वह जीवन में पूर्ण अनुकूलता प्राप्त कर सके।

मेरे जीवन में यह अनुभव में आया है, कि जो व्यक्ति पूरे वर्ष में एक बार इस अवसर पर सौभाग्य प्राप्ति प्रयोग को भली प्रकार से सम्पन्न कर लेता है, उसका पूरा वर्ष अपने आपमें ही सुखदायक और सौभाग्यशाली बना रहता है, उसके सारे ऋण समाप्त हो जाते हैं, आश्चर्यजनक रूप से आर्थिक उन्नति होने लगती है, और वह पूर्ण स्वास्थ्य लाभ कर जीवन में निरन्तर उन्नति करता रहता है।

यह मेरे जीवन का अनुभव रहा है कि वास्तव में ही हमारे ऋषि-मुनि श्रेष्ठ विद्वान थे, और उन्होंने जिस विधि को ढूंढ़ निकाला है, वह अपने आपमें ही आश्चर्यजनक है, इस प्रयोग को सम्पन्न करते ही आश्चर्यजनक अनुभव होने लगते हैं, और वह सभी दृष्टियों से उन्नति करता हुआ पूर्ण सुखी होता है और सौभाग्य प्राप्त कर लेता है।

सौभाग्य प्राप्ति प्रयोग

यह प्रयोग वर्ष में केवल एक बार इसी दिन सम्पन्न किया जा सकता है, और मेरी राय में घर के प्रत्येक सदस्य को यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए, यों तो शास्त्रों में लिखा है, कि घर के मुखिया को यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए जिससे कि उसके जीवन में सभी दृष्टियों से अनुकूलता प्राप्त हो सके, ज्यादा अच्छा यह होगा कि पति या घर की पत्नी यह प्रयोग सम्पन्न करे, जिससे उसका सुहाग अक्षुण्ण रह सके और उसे जीवन में सभी दृष्टियों से सुख और सौभाग्य प्राप्त हो सके, उसे अपने पति का, अपने पुत्र व पुत्रियों का सुख मिल सके, उसकी पुत्रियों के शीघ्र विवाह सम्पन्न हो सकें, और वह अपने जीवन में जो चाहे वह प्राप्त कर सके।

आसान प्रयोग

यह प्रयोग अत्यन्त आसान है, और इसमें कोई जटिल विधि-विधान नहीं है, इसलिए कम पढ़ा-लिखा साधक भी इस प्रयोग को सम्पन्न कर सकता है, इस

प्रयोग को घर के मुखिया के अलावा जो भी अपने दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलने की इच्छा रखता है, जो भी अपने जीवन में पूर्ण उन्नति चाहता है, जो भी निरन्तर आगे बढ़ता हुआ पूर्ण सुख और सौभाग्य की इच्छा रखता है, उसे यह प्रयोग इस दिन अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए, विद्यार्थियों के लिए तो यह प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण सफलतादायक और सौभाग्यवर्धक है ।

अतिश्रवा उपनिषद में बताया गया है, कि इस प्रकार का प्रयोग सम्पन्न करने से सभी प्रकार की पूर्ण शान्ति प्राप्त होती है और मानसिक तनाव समाप्त हो जाता है, ऐसे व्यक्ति के सभी रोग दूर हो जाते हैं, धन, कीर्ति और आयु की वृद्धि होती है, तथा उसके महापाप भी पूर्ण रूप से नष्ट हो जाते हैं, उसकी सारी आशाओं की पूर्ति होती है, चाहे उस पर कितना ही भीषण तांत्रिक प्रयोग किया हुआ हो, तो वह प्रयोग भी निश्चय ही समाप्त हो जाता है, यही नहीं अपितु उसके सारे मनोरथ और सारे उद्देश्य सिद्ध हो जाते हैं, उसे तीर्थों में जाने का पूर्ण फल मिल जाता है, भूत-प्रेत डाकनियों का भय नष्ट हो जाता है, तथा तेज एवं बल की वृद्धि होती है ।

वास्तव में ही यह प्रयोग अपने आप में महत्वपूर्ण है, यह भले ही सामान्य दिखाई दे, परन्तु इसका फल अपने आप में अचूक होता है, जिस प्रकार से एक छोटा सा अंकुश विशाल डीलडौल वाले हाथी को नियन्त्रण में कर लेता है, उसी प्रकार से यह छोटा सा प्रयोग सभी प्रकार के दुर्भाग्यों को समाप्त कर सौभाग्य में परिवर्तित करने की क्षमता रखता है ।

साधना प्रयोग

साधक इस दिन प्रातःकाल उठ कर यह निश्चय करे कि मैं आज सौभाग्य प्राप्ति प्रयोग सम्पन्न करूंगा, इसके लिए वह स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर ले, यदि स्त्री इस साधना प्रयोग को सम्पन्न करना चाहती है, तो वह प्रातःकाल उठकर अपना सिर धो ले और बाल खुले रखे ।

इसके बाद साधक आसन पर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाय, उसके लिए यह आवश्यक नहीं है, कि वह पीली धोती ही धारण करे, वह सफेद धोती भी पहिन सकता है, इसी प्रकार स्त्री साधिका भी किसी प्रकार के वस्त्र धारण कर यह प्रयोग सम्पन्न कर सकती है ।

इसके बाद साधक सामने लकड़ी का बाजोट या तख्ता रख कर उस पर रेशमी वस्त्र बिछा दें, और उसके मध्य में चावलों की ढेरी बना दें, फिर चावल की ढेरी पर तांबे का, मिट्टी का, या पीतल का छोटा सा कलश स्थापन करें, और इस कलश पर केसर से त्रिकोण बनावें, फिर इस कलश में जल डालें यदि घर में गंगाजल हो तो थोड़ा सा गंगाजल भी डालें, इसके बाद कलश में अक्षत, सुपारी और थोड़े से पुष्प डाल दें तथा कलश के मुंह पर पांच पीपल के या आम के पत्त रख दें, यदि इस प्रकार के पत्ते न मिलें तो किसी प्रकार के पांच पत्ते रख कर उसके ऊपर नारियल रख दें ।

इसके बाद कलश पर अबीर गुलाल चढ़ा कर निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—

मन्त्र

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्म-कलश ! देवताभीष्ट-सिद्धिद:। सर्व तीर्थाम्बु-पूर्णेन पूरयास्य मनोरथम् । हं क्लीं लं ह्रीं ।

इस प्रकार से मन्त्रोच्चारण करने के बाद सामने गुरु का चित्र स्थापित करें और गुरु का पूजन करें ।

इसके बाद साधक सामने घी का दीपक लगावें और अगरबत्ती जलावें तथा सामने किसी पात्र में **"सौभाग्य प्राप्ति यन्त्र"** को स्थापित कर दें, यह यन्त्र अपने आपमें अत्यन्त श्रेष्ठ व मन्त्र सिद्ध होता है, और इस पर पूर्ण ज्ञानाभिषेक, और पूर्णाभिषेक सम्पन्न कर प्राण प्रतिष्ठा युक्त बनाया जाता है, जिसकी वहज से यह यन्त्र, मन्त्र-सिद्ध और अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाता है ।

इसके बाद साधक **स्फटिक माला** से इस कलश के सामने निम्न तीनों मन्त्रों की ग्यारह-ग्यारह माला मन्त्र जप करे, इस प्रकार मन्त्र जप में ज्यादा से ज्यादा **२ घण्टे का समय लगता है ।**

प्रथम मन्त्र

॥ ॐ ऐं ऐं श्रीं ह्रीं ह्रीं ॥

मन्त्र सम्पन्न करने के बाद साधक निम्न प्रकार का यन्त्र कलश पर केसर से अंकित करें, यह अंकन किसी तिनके से या चांदी की शलाका से किया जा सकता है, इस यन्त्र को **"सौभाग्य यन्त्र"** कहते हैं, फिर इस यन्त्र का अंकन कलश पर करके उसकी पूजा करें, और निम्न मन्त्र जप स्फटिक माला से ही करें—

१	२	५
३	७	६

द्वितीय मन्त्र

॥ ऐं ह्रीं ऐं ॥

इसके बाद साधक जो सामने पात्र में सौभाग्य यन्त्र रखा है, उस यन्त्र पर "ह्रीं" अक्षर केसर से अंकित करें, और उसकी संक्षिप्त पूजा करें, संक्षिप्त से तात्पर्य यन्त्र पर चावल चढ़ावें, पुष्प समर्पित करें, और भोग लगावें, इससे संक्षिप्त पूजा सम्पन्न हो जाती है ।

तृतीय मन्त्र

॥ ॐ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ॐ ॥

ऐसा करने पर यह साधना प्रयोग सम्पन्न हो जाता है, तब साधक उस यन्त्र को अपने गले में धारण कर ले, गले में पहनने के लिए साधक इस यन्त्र में लाल या पीला धागा पिरो दें अथवा सोने या चांदी की चैन पिरो कर भी गले में धारण कर सकते हैं ।

शास्त्रों में वर्णित है कि साधक पूरे वर्ष भर इस यन्त्र को अपने गले में पहने रहें, पर यदि ऐसा सम्भव न हो तो जिस दिन यह साधना सम्पन्न करें, उससे अगले एक महिने तक तो अवश्य ही यह यन्त्र गले में पहने रहें, इसके बाद इस यन्त्र को उतार कर अपने पूजा स्थान में रख सकते हैं ।

वास्तव में ही यह प्रयोग अपने आपमें महत्वपूर्ण है, उससे भी ज्यादा यह यन्त्र महत्वपूर्ण है, जो **'महा-चिनाचार सार तन्त्र'** से अभिषेक युक्त और **'शक्ति संगम तन्त्र'** के अनुसार प्रभावयुक्त बनाया हुआ होता है, जिसकी वजह से इसका प्रभाव तुरन्त ही प्राप्त होने लगता है ।

वास्तव में ही वे साधक और साधिकाएं धन्य हैं, जो इस प्रकार के अवसर का लाभ उठा कर यह साधना सम्पन्न करते हैं, और अपने जीवन में सभी समस्याओं को समाप्त कर पूर्णता प्राप्त करते हैं । ●

अष्टलक्ष्मी प्राप्ति संभव है

अन्नपूर्णा शंख पूजा से

विशेष तांत्रिक-मांत्रिक प्रयोग

साधना के जानकार अच्छी तरह से जानते हैं, कि सबसे सरल साधनाएं लक्ष्मी की साधनाएं ही हैं, लक्ष्मी साधना यदि विधि-विधान सहित सम्पन्न की जाय, तो साधक साधना का यह पहला अध्याय आसानी से पूर्ण कर सकता है, जो योगी होते हैं वे तो लक्ष्मी साधना में पूर्णता प्राप्त करने के पश्चात् ही आगे उच्च साधनाएं सम्पन्न करते हैं, विश्व भर में उनकी जय-जयकार उच्च साधनाओं के कारण ही होती है, लेकिन गृहस्थ के लिए तो सबसे महत्वपूर्ण साधना लक्ष्मी साधना ही है, लक्ष्मी का दूसरा नाम ही **श्री सुन्दरी** तथा **अन्नपूर्णा** कहा गया है, और इसका विधान गृहस्थ साधक के जीवन की प्रत्येक बाधा के निवारण हेतु विशेष फल प्रदायक है, श्री सुन्दरी देवी भोग और मोक्ष दोनों ही देने वाली है, भोग भौतिक पदार्थों से आनन्द प्राप्त करने की क्रिया को कहते हैं, भगवान शिव की पत्नी गौरी को श्री सुन्दरी अन्नपूर्णा कहा गया है, इसलिए प्रयोग के माध्यम से अन्नपूर्णा के एक सौ आठ ऐश्वर्य, जिन्हें श्री श्री १०८ कहा गया है, की प्राप्ति होती है।

आठ विशेष लाभ

इस साधना प्रयोग के आठ लाभ हैं, साधना प्रयोग सम्पन्न करने से पहले साधक को चाहिए कि वह गुरु का स्मरण करके गणपति का ध्यान करते हुए, मन्त्र और श्री सुन्दरी देवी में पूर्ण आस्था व्यक्त करते हुए जीवन के निम्नलिखित आठ सुखों की प्राप्ति चाहते हुए, पूर्ण आस्था के साथ मन्त्र प्रयोग करें—

१– पूर्ण निरोग शरीर
२ - आनन्दयुक्त स्वनिर्मित भवन
३– आज्ञाकारी बुद्धिमान और चतुर पुत्र
४– मनोहारिणी कान्ता (पत्नी)
५– **सुधनम्**-जीवन में पर्याप्त धन की प्राप्ति
६– **आतिथ्य**-घर में नित्य अतिथियों का सम्मान
७– **देवाभिमानम्**-घर में नित्य देवताओं का पूजन अर्चन
८– जीवन में हर प्रकार से पूर्ण मानसिक शान्ति, निश्चिन्तता

साधना क्रम

यह प्रयोग विशेष प्रभावशाली और तुरन्त फलदायक है, जिसे सम्पन्न करने के लिए एक विशेष क्रम से निम्न-लिखित नियमों का दृढ़ता से पालन करते हुए, मन्त्र सिद्ध और प्राण प्रतिष्ठायुक्त **अन्नपूर्णा शंख** प्राप्त करके, सदगुरु का आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद ही यह प्रयोग सम्पन्न किया जाता है।

१-किसी भी अष्टमी से साधना प्रारम्भ करें, १४ दिनों का यह साधना प्रयोग एक ही स्थान पर रह कर संपन्न करें।

२-पूर्ण स्वच्छता के साथ, पवित्रता का ध्यान रखते हुए साधना प्रयोग करें।

३-उत्तर दिशा की ओर मुंह करके पीला आसन बिछाकर पीली धोती अर्थात् पीले वस्त्र धारण कर प्रयोग करें।

४-अपने सामने लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछा कर उस पर चावल की ढेरी बना कर उस पर प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'अन्नपूर्णा शंख' स्थापित कर दें।

५-अपने सामने घी और तेल के दो अलग-अलग दीपक जला कर रखें।

६-जल पात्र कुंकुंम, अक्षत, गणपति विग्रह अथवा सुपारी में गणपति को स्थापित कर के शंख के बराबर में रख दें, फिर शंख को कच्चे दूध से फिर गंगाजल से स्नान करा के सात बार यह क्रम दोहराएं, तत्पश्चात् शंख को यज्ञोपवीत धारण कराएं, पंचोपचार विधि से गुरु का, गणपति का और अन्नपूर्णा शंख का पूजन करें।

७-अष्ट लक्ष्मियों की प्रतीक आठ बिन्दियां केसर से 'अन्नपूर्णा शंख' पर निम्न मन्त्रों का क्रम धारण करके लगाएं—

ॐ धन लक्ष्म्यै नमः ॐ धान्य लक्ष्म्यै नमः
ॐ धरा लक्ष्म्यै नमः ॐ कीर्ति लक्ष्म्यै नमः
ॐ आयु लक्ष्म्यै नमः ॐ यश लक्ष्म्यै नमः
ॐ पुत्र लक्ष्म्यै नमः ॐ वाहन लक्ष्म्यै नमः

इस शंख के सामने अक्षत, आठ गुलाब के पुष्प, दूध का बना नैवेद्य, आठ सुपारी, अबीर गुलाल, एक नारियल, आठ लौंग, आठ इलायची समर्पित करें और फिर हाथ जोड़ कर निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए हृदय से प्रणाम करें—

१–ॐ महालक्ष्म्यै नमः
२–ॐ अन्नपूर्णायै नमः
३-ॐ शिवायै नमः

फिर कपूर या घी से शिव की आरती करें, पूर्ण पूजन के बाद **रुद्राक्ष, हकीक** या **स्फटिक माला** से नीचे लिखे अन्नपूर्णा मन्त्र चौदह दिन तक नित्य ११ माला मन्त्र जप करें।

अन्नपूर्णा मन्त्र

॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अन्नपूर्णाय शिवायै नमः ॥

साधक को चाहिए कि अष्टमी से शुरू करके अष्टमी को ही यह साधना पूर्ण करें, अष्टमी के दिन आठ छोटी-छोटी कन्याओं को भोजन कराये और सामर्थ्य के अनुसार दक्षिणा दे कर उनका सम्मान पूजन करे, क्योंकि कन्याओं को भी अन्नपूर्णा रूप माना गया है, प्रेम से उन्हें विदा करे और फिर प्रयोग किये गए **अन्नपूर्णा शंख** को लाल कपड़े में लपेट कर तिजोरी, सेफ में या पूजा स्थल में रख दे, सुपारी, अक्षत, जो शंख पर चढ़ाए हुए हैं, उसी के साथ वस्त्र में लपेट ले, शेष पदार्थ, नैवेद्य आदि परिवार में बांट कर ग्रहण कर ले।

इस प्रकार से किया गया अन्नपूर्णा शंख प्रयोग साधक के जीवन में निश्चय ही चालीस दिन के अन्दर अपना फल देता ही है, यह पूर्णता की साधना का प्रयोग कहलाता है जिसे प्रत्येक साधक को अपने जीवन में सम्पन्न करना चाहिए। ●

स्वप्न तो दर्पण है जीवन का

जिसमें देख सकते हैं आने वाली समस्याओं को

और

संभव है इनका सरल निराकरण

स्वप्न प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का आवश्यक अंग है, जो भी व्यक्ति नींद लेता है, उसे स्वप्न आना अनिवार्य है, यह अलग बात है कि उसे वह स्वप्न याद रहे या न रहे, कई स्वप्न आंख खुलने पर याद रह जाते हैं, और अधिकांश स्वप्न हम भूल जाते हैं, इस सम्बन्ध में कई प्रकार की धारणाएं हैं, कुछ लोगों के अनुसार स्वप्न के समय जीव इस शरीर से निकल कर कहीं अन्यत्र चला जाता है, और वहां के विचित्र दृश्य देख कर निद्रा भंग होने तक पुनः शरीर में लौटा आता है, कुछ लोगों के अनुसार स्वप्न में भविष्य के संकेत हैं।

स्वप्न शास्त्रियों के अनुसार सोने के बाद घण्टे भर के अन्दर-अन्दर पहला स्वप्न मानव देख लेता है, स्वप्नों की तीव्रता होने पर नेत्रों की पुतलियां घूमने लग जाती हैं, सामान्यतः प्रत्येक व्यक्ति हर रात पांच-छः स्वप्न देखता है।

नोबल प्राइज विजेता प्रो० एडगर एड्राइन के अनुसार सोने के समय हमारे मस्तिष्क का अवचेतन क्रमशः सक्रिय होता जाता है, क्योंकि उस पर धीरे-धीरे दबाव कम होने लगता है, यह दबाव कम होने पर मस्तिष्क तरंगों का कंपन-क्रम बदलता है और मस्तिष्क तरगें एक विशेष गति से दौड़ती हैं, इसी से स्वप्न दिखाई देते हैं।

हिमालय के प्रसिद्ध योगी **स्वामी विरूपानन्दजी** ने इस सम्बन्ध में कई वर्षों तक प्रयोग किये हैं, और इस क्षेत्र के वे अधिकारी व्यक्ति माने जाते हैं, उन्होंने एक विशिष्ट विधि बताई है, जिसके अनुसार व्यक्ति स्वप्न के माध्यम से अपनी दैनिक समस्याओं का हल प्राप्त कर सकता है।

रात्रि को सोने से पूर्व अपने हाथ-पैर ठंडे पानी से धो लें, फिर अपनी समस्या का एक साफ कागज पर लिख लें और उस कागज को अपने सिरहाने रख दें, तथा स्वप्नेश्वरी देवी **का निम्न ध्यान उच्चरित कर निवेदन करें कि मुझे इस समस्या का हल आप स्वप्न में बता दें तथा हल बताने के साथ ही मेरी निद्रा खुल जाय।**

स्वप्नेश्वरी देवी का ध्यान

स्वप्नेश्वरी महादेवी, श्री श्रीमन्तर साधने।
मम सिद्धि असिद्धि वां स्वप्ने सर्व प्रदर्शयः॥

इस प्रकार ध्यान कर अपने प्रश्न को पुनः उच्चरित करें और आंख बन्द करके सो जायें, रात्रि को अवश्य ही स्वप्न में इस समस्या का निराकरण स्वप्नेश्वरी देवी स्पष्ट करती हैं।

नित्य कई प्रकार की समस्याएं हमारे सामने आती हैं, जिसमें मन डांवाडोल हो ही जाता है, कि यह कार्य किया जाय या नहीं एवं तुरन्त निर्णय नहीं लिया जा पाता, ऐसी स्थिति में यह विधि अत्यन्त ही अनुकूल मानी गई है।

स्वामी जी के अनुसार पहले इस मन्त्र को सिद्ध कर लेना चाहिए, सवा लाख मन्त्र जप करने पर यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है, और इसके बाद मन्त्र उच्चारण कर अपनी समस्या को स्पष्ट कर के सोने पर स्वप्न में उस समस्या का सही हल प्राप्त हो जाता है, जिससे कि जीवन में सही निर्णय लेने में अनुकूलता होती है।

पीछे जो ध्यान लिखा गया है, वही ध्यान, मन्त्र भी है, अतः इसी ध्यान या मन्त्र का सवा लाख मन्त्र जप २१ दिन में पूरा करना चाहिए।

स्वप्न में सही हल प्राप्त हो, इसके लिए तांत्रोक्त विधान भी अनुभूत है, और इसे केरल के प्रसिद्ध योगी **स्वामी पुट्टपनाथ** ने बताया था, यह मन्त्र मात्र ११ सौ बार जप से ही सिद्ध हो जाता हैं, सिद्ध होने पर रात्रि को सोते समय मन्त्र उच्चारण कर अपनी समस्या बोल कर सो जाना चाहिए, एक घण्टे के भीतर-भीतर समस्या का हल स्वप्न में दिखाई देता है।

मन्त्र

ॐ क्लीं स्वप्नमोहिनी ह्रीं मलयाल भगवति सकलसम्भूत सम्मोहिनीं क्लीं कोडूमारूं बुद्धि कडूतु पुमाकि कोडवा मलयाल भगवति कोडूवा ईश्वराणे उमक् उमाणे उमुच्छु मुपतु मक्कोटि देरा क्वलाणे कोडुवा मलयाल भगवति क्लीं।

यह मन्त्र अनुभूत है. कोई भी साधक इसे सिद्ध करके पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है. स्वामी जी के अनुसार यह मन्त्र अत्यन्त गोपनीय है, और किसी पर विशेष कृपा होने पर ही स्वामी जी इस मन्त्र को बताते थे।

वास्तव में ही स्वप्न जीवन में सहायक हैं और इनके माध्यम से हम सही और तुरन्त निर्णय लेने में समर्थ हो पाते हैं। ●

आपको शिकायत है.......

पाठकों को शिकायत है कि उन्हें पूरे साल की पत्रिका नहीं मिली है किसी सदस्य को कोई अंक प्राप्त नहीं हुआ है, ऐसा होने का कारण डाक में पत्रिका का गुम हो जाना हो सकता है अथवा कोई अन्य कारण, लेकिन हमने आपको विश्वास दिया था और अब फिर देते हैं कि आपको पूरे अंक प्राप्त कराएंगे, अतः जिन्हें अपने सेट में कोई अंक नहीं मिला है तो वे पत्र लिख भेजें।

भविष्य हेतु यह निश्चय किया गया है, कि हर महीने १२ तारीख को आपको पत्रिका भेज दी जायेगी, यदि यह पत्रिका आपको प्राप्त नहीं होती है तो तत्काल पत्र अवश्य लिख भेजें, सम्बन्धित महीने की शिकायत/अप्राप्ति सूचना उसके अगले महीने के अन्त तक अवश्य हमें मिल जानी चाहिए हम आपको तत्काल नयी पत्रिका भेज देगें ऐसा न हो कि फरवरी का अंक प्राप्त न होने की सूचना आप हमें जुलाई में दें, ऐसे में कार्यवाही कैसे संभव है ?

देह साधे सब सधै निर्बल देह सब जाहिं

देह सिद्धि—परम सिद्धि

क्या आपका शरीर आपके नियंत्रण में है ?

स्वस्थ शरीर का क्या तात्पर्य है? शरीर और मन का क्या सम्बन्ध है? क्या साधना के माध्यम से देह को पूर्ण स्वस्थ बनाया जा सकता है? क्या देह का संचालन साधक अपने स्वयं के नियन्त्रण में रख सकता है? रोगों की उत्पत्ति क्यों होती है? क्या इस पर विजय प्राप्त की जा सकती है?

देह अर्थात् शरीर को ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान माना गया है, इसकी सभी क्रियाएं अपने आपमें पूर्ण और निरन्तर चलती रहती हैं, यह एक ऐसी मशीन है, जो सभी क्रियाओं का संचालन स्वयं करती है, अपने भीतर और बाहर की टूट-फूट का निर्माण स्वयं करती है, आधुनिक चिकित्सा विज्ञान इतना अधिक उन्नत हो जाने के बावजूद इस शरीर के सभी रहस्यों को नहीं समझ पाया है, इस देह का निर्माण करना तो बहुत बड़ी बात है आज तक मानव हृदय के जैसा पम्प (मोटर) नहीं बनी है जो कि बिना रुके ७०-८० साल तक निरन्तर चलती रहे, अच्छी से अच्छी यांत्रिक मोटर भी २-३ दिन से ज्यादा निरन्तर नहीं चल सकती, हृदय का यह निरन्तर धड़कना वास्तव में आश्चर्य ही है, आप विश्राम करते हैं, नींद लेते हैं, लेकिन देह के सभी भीतरी अंग अपना कार्य सुचारु रूप से निरन्तर करते रहते हैं, उनकी सभी क्रियाएं चलती रहती हैं, क्या यह सब कुछ एक चमत्कार नहीं है ?

मानव शरीर की रिपेयरिंग अपने आप होती है, यदि कहीं घाव हो जाय तो तत्काल विशेष शारीरिक प्रक्रियाएं शुरू हो जाती हैं, और घाव के स्थान पर नये उतक बनने लग जाते हैं, प्रत्येक अंग अपने-अपने काम करते रहते हैं, और सभी अंगों में एक विशेष समन्वय रहता है मानो कोई संगीत बज रहा है, वीणा के तार एक लय में मधुर ध्वनि उत्पन्न कर रहे हैं और जहां यह एक भी तार टूटा तो संगीत का सुर (स्वर, लय) बिगड़ जाता है, ईश्वर की ऐसी रचना के लिए हमें प्रतिदिन परमपिता परमात्मा को धन्यवाद देना चाहिए क्योंकि यह सबसे बड़ा वरदान है, जिसके लिए आप दूसरे पर आश्रित नहीं है और इस देह के द्वारा तो क्या नहीं किया जा सकता है? इसकी शक्ति तो अपरम्पार है।

देह और मस्तिष्क

इस शरीर का नियन्त्रण केन्द्र है मुट्ठी भर आकार का १०५ ग्राम का मस्तिष्क, जिसकी संरचना तो निराली ही है. यह तो अपने भीतर इतने अधिक रहस्यों को समेटे हुए है कि उसकी गणना करना असंभव है, शरीर के प्रत्येक अंग का ध्यान रखना उसे सही रूप में रखना, कब किसको कितना काम करना है, यह सब मस्तिष्क से नियन्त्रण से होता है, कांटा चुभता है उगली में और तरगों के माध्यम से सेकेण्ड के हजारवें हिस्से समय में ही संदेश पहुंच जाता है मस्तिष्क को और वहां से पुनः आदेश भी आ जाता है कि यहां से उंगली हटा लो, यह प्रक्रिया इतनी तीव्र तथा स्वाभाविक रूप से होती है, कि लगता है तत्काल हो रही है, जब कि इस पूरो क्रिया में कई संदेशों का आदान-प्रदान शरीर के भीतर ही भीतर हो जाता है इसीलिए मस्तिष्क को शिव स्थान कहा गया है और यह कुण्डलिनी चक्र का सहस्रार क्षेत्र है, पूरा नाड़ी का तन्त्र गुदा से लगा कर रज्जु से होता हुआ मस्तिष्क तक स्थित है, शरीर के अन्य भागों में तो इसकी सामान्य शाखाएं हैं, इसी कारण कुण्डलिनी शक्ति के सातों चक्र इस क्षेत्र में स्थित हैं।

अब आप स्वयं अपने बारे में विचार करें कि क्या आपका मस्तिष्क और आपके शरीर में समन्वय है, जब एक कांटा चुभने से इतनी अधिक पीड़ा हो सकती है कि मस्तिष्क उस समय और कोई प्रश्न सोचता ही नहीं, और ऐसे में यदि देह रोग ग्रस्त हो तो क्या मस्तिष्क अपना कार्य पूर्ण रूप से कर सकता है? कदापि नहीं, आज के युग में हर कोई किसी न किसी बीमारी से ग्रस्त है, किसी को पेट के गैस की तकलीफ है, तो कोई जोड़ों के दर्द से परेशान है. किसी को हर समय जुखाम रहता है, तो कोई हृदय की बीमारी से, तो कोई शारीरिक कमजोरी से ग्रस्त है, थोडी पीड़ा होते ही भागते हैं डाक्टरों के पास और दवाइयों द्वारा करते हैं शरीर पर अत्याचार, एक व्याधि को दबाने के लिए दूसरी नई व्याधि को अपने शरीर में आमन्त्रण देते हैं, ऐसे बीमार शरीर से साधना में एकाग्रता कैसे संभव है? दो घण्टे साधना में पालथी मार कर बैठ नहीं सकते हैं पद्मासन में बैठना तो दूर की बात है, और साधक कहते हैं कि मुझे साधना में सिद्धि नहीं मिल रही है।

मस्तिष्क तभी पूर्ण रूप से तीव्र हो कर अपनी शक्ति से तरंगें उत्पन्न कर सकता है, जब उसे यह निश्चिन्तता रहे कि शरीर के सभी अंग सही रूप में अपनी गति में लयबद्ध रूप में कार्य कर रहे हैं, और यह मस्तिष्क की तरगें सब कुछ करने में समर्थ हैं, और इसी क्रिया को ध्यान, एकाग्रता कहते हैं, इस ध्यान में मस्तिष्क सक्रिय है, आपके मन्त्र, आप के जप पूर्ण रूप से मस्तिष्क के माध्यम से उस साधना तत्व की ओर प्रवाहित हैं तो जान लीजिए कि सिद्धि आपको प्राप्त हो कर ही रहेगी।

पूज्य गुरुदेव कहते हैं कि जब मैं प्रवचन करता हूं तो शिष्यों का, साधकों का निरीक्षण भी करता रहता हूं और देखता हूं कि कोई साधक पालथी मार कर बैठा है तो कोई घुटने मोड़ कर, कोई इधर-उधर देखता है तो कोई अपना सिर खुजाता है, एक ही आसन पर एक ही मुद्रा में अपने मस्तिष्क को केन्द्रित कर बैठने वालों को

संख्या तो शायद कुछ ही होगी, ऐसा क्यों होता है? इसका कारण उनके तन और मन-मस्तिष्क में समन्वय नहीं है, दोनों एक ही धारा में नहीं बहते और जब तक यह नहीं होगा तब तक मन्त्र और जप शब्द ही रहेंगे, तरंगें नहीं बनेंगी, चेतना शक्ति नहीं बनेगी जब कि अनुष्ठान का, साधना का मूल उद्देश्य ही मन्त्र को बाण बना कर साधना के लक्ष्य द्वारा सिद्धि का भेदन करना है।

अपनी देह पर गर्व करना सीखो !

परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ वरदान देह की रक्षा करना है, इसे सुन्दर ढंग से संवार कर रखना व्यक्ति का कर्त्तव्य है. जिस सुन्दर स्वस्थ रूप से परमात्मा ने हमें यह देह प्रदान की है, उसी सुन्दर स्वस्थ रूप से इस देह को ७०-८० साल तक पूर्ण रूप से स्वस्थ रख कर पुनः परमात्मा को अर्पण करें तो यह जीवन की सबसे बड़ी साधना होगी, जबकि होता यह है कि परमात्मा के सुन्दर वरदान को हम सब रोग ग्रस्त कर एक सड़ा-गला ढांचा मृत्यु के समय परमात्मा को अर्पित करते हैं, यह परमात्मा का अपमान है, जीवन में केवल भोग ही सब कुछ नहीं है इसमें योग भी आवश्यक है, जिस प्रकार मन्दिर में पूर्ण श्रद्धा से देवता की, भगवान की पूजा करते हैं, उसी प्रकार इस देह की पूजा भी योग द्वारा आवश्यक है, इस देह में तो समस्त देवताओं—ब्रह्मा, विष्णु, शिव का स्थान है और इस देह-पूजा की प्रधानता के कारण ही हमारे ऋषियों ने योग प्राणायाम को विशेष महत्व दिया है, योग साधना द्वारा अपने शरीर पर नियन्त्रण रखा जा सकता है।

शरीर पूर्ण रूप से स्वस्थ रह सकता है, सारे रोग दूर हो सकते हैं, दूषित वृत्तियां शान्त हो सकती हैं, इसके लिए प्रयास तो करना ही पड़ेगा, हाथ पांव को तो हिलाना ही पड़ेगा, कुछ नियमों का पालन करना पड़ेगा, ऐसा नहीं है कि सायंकाल के कार्य प्रातः कर रहे हैं और प्रातः के कर्म दोपहर को, ! प्रतिदिन जल्दी उठ कर अभ्यास प्रारम्भ करें, एक दिन, दो दिन, और पन्द्रह दिन बीतते-बीतते आपको स्वयं को ऐसा लगेगा कि कुछ विशेष परिवर्तन हो रहा है, एकाग्रता, प्रसन्नता बढ़ रही है, उतना ही आहार लें जितना शरीर के लिए आवश्यक है और जब शरीर आहार की इच्छा करे तब आहार लें न कि घड़ी के अनुसार भोजन करें अथवा भोजन के स्वादिष्ट, सुगन्धित होने के कारण भोजन करें, शरीर के लिए सब क्रियाएं आवश्यक हैं और इसमें नींद का भी विशेष महत्व है, सोते समय परमात्मा को धन्यवाद दें कि मुझे एक और सुन्दर दिन उपहार में दिया, जिसके लिए मेरा कोई प्रयत्न नहीं था, उस समय अपनी चिन्ताए परमात्मा को सौंप कर शयन करें।

योग प्राणायाम और शरीर

आजकल व्यायाम भी मशीनों द्वारा सम्पन्न किया जाता है, शरीर को सुदृढ़ बनाने के लिए विशेष व्यायाम सम्पन्न करते हैं, लेकिन इस प्रकार के व्यायाम से शरीर तात्कालिक रूप से स्वस्थ, सुदृढ बन तो जाता है, पर जैसे ही व्यायाम को छोड़ा, कि वापिस शरीर में मोटापा, थुलथुलपन वायु विकार, अनिद्रा आदि बाधाएं प्रारम्भ हो जाती हैं. इसके विपरीत योग और प्राणायाम न केवल शारीरिक विकास करते हैं अपितु इससे मानसिक विकास भी पूर्ण रूप से होता है. प्राणायाम और योगासन द्वारा शरीर के साथ-साथ मस्तिष्क को भी सक्रिय किया जाता है. जिससे चित्त वृत्तियों में शुद्धता आती है, शरीर में, चेहरे पर एक तेज उत्पन्न होता है. मन की एकाग्रता के विकास से प्राण-शक्ति का संचय होता है व्यायाम केवल शरीर को कड़ा और कठोर बनाते हैं. मानसिक शान्ति के लिए प्राणायाम तथा योगासन से बढ़ कर कोई उपाय नहीं है, साधक के लिए तो आवश्यक है कि वह अपने भीतर एकाग्रता का ऐसा विकास करे कि अपनी साधना को बिना रोक-टोक सम्पन्न कर सके।

यह भारत का दुर्भाग्य है कि योगासन, प्राणायाम का प्रारम्भ यहीं से हुआ लेकिन आज भारतीय ही व्यायाम, प्राणायाम, योग सबसे कम करते हैं, और इसका प्रभाव यह है कि हमारे देश में भरी जवानी में बूढ़े दिखने वाले लोगों की भरमार है, योग और प्राणायाम के लिए ६ कर्म विशेष रूप से आवश्यक है और ये ६ कर्म शरीर-शुद्धि, मानसिक एकाग्रता, रोग नाश के प्रधान स्वरूप हैं, ये कर्म हैं—१-धोती, २-वस्ती, ३-नेति, ४-गजकरणी, ५-नौली, ६-त्राटक इसके साथ ही प्राणायाम की तीन प्रक्रियाएं १-पूरक, २-कुम्भक, ३-रेचक हैं, इन क्रियाओं द्वारा साधक अपनी साधना में उच्चतम स्थिति प्राप्त कर सकता है, इसके अतिरिक्त योग साधना में मुद्रा और बन्ध का भी विशेष महत्व है, इस सम्बन्ध में अभी विस्तार भय से पूरा विवरण नहीं दिया जा रहा है।

देह सिद्धि—परम सिद्धि साधना

देह सिद्धि के लिए सबसे पहले आवश्यक है कि शरीर के रोगों की समाप्ति हो, क्योंकि रोग और सिद्धि एक दूसरे के शत्रु हैं, जिसके शरीर में रोग हैं चाहे वह शारीरिक हो अथवा मानसिक, लघु हो अथवा दीर्घ, उसे सिद्धि नहीं मिल सकती, और जिसे सिद्धि प्राप्त है उसके पास रोग फटक नहीं सकता, जिस प्रकार अग्नि में सब कुछ भस्म हो जाता है, उसी प्रकार योग-साधना, सिद्धि द्वारा समस्त रोग भस्म हो जाते हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय साधना की प्रमुखता को सभी ऋषियों, मुनियों तथा योगियों ने एक मत से स्वीकार किया है, इस विशिष्ट साधना में तीन नेत्र वाले भगवान त्र्यम्बक शिव की उपासना की जाती है कि वे मुझे इस प्रकार का श्रेष्ठ पुष्ट शरीर दें कि मैं मृत्यु के बन्धन से मुक्त हो जाऊं।

यह साधना किसी भी सोमवार को प्रारम्भ की जा सकती है, शिव मन्दिर में अथवा अपने घर में इसका क्रम पूर्ण विधि-विधान सहित सम्पन्न करना चाहिए, यदि कोई व्यक्ति इतना अधिक रोगी है कि वह स्वयं पूर्ण विधान सम्पन्न नहीं कर सकता, तो उसके नाम का संकल्प लेकर दूसरा व्यक्ति साधना सम्पन्न कर सकता है।

अपने हाथ जल लेकर निम्न संकल्प करें—

संकल्प

ॐ मम आत्मनः श्रुति स्मृतिपुराणोक्तफल प्राप्त्यर्थं। मम (अमुक) यजमानस्य वा शरीरेऽमुक-पीडा निराशद्वारा सद्यः आरोग्य प्राप्त्यर्थं श्रीमहा-मृत्युंजय देवता प्रीत्यर्थे (अमुक) संख्या परिमितं श्रीमहा मृत्युंजयमन्त्रजपं अहं करिष्ये॥

इस साधना में अपने सामने साधक एक लाल वस्त्र बिछा कर **'महामृत्युंजय भैरव यन्त्र'** स्थापित करें और दोनों ओर **अक्षोती व चक्षोती** स्थापित करें, सामने गुग्गल की धूप दें तथा एक कागज पर अथवा भोजपत्र पर पुनः यन्त्र पर अंकित कर रखें, **रुद्रयामल तन्त्र** में लिखा है, कि भगवान मृत्युंजय के प्रसाद से सभी प्रकार का भय दूर हो जाता है।

साधक धूप जला कर सामने गुड़ का प्रसाद (नैवेद्य) अर्पित कर, **रुद्राक्ष बीज माला'**, से निम्न मन्त्र का जप करें।

यह रुद्राक्ष बीज माला अप्राप्य और सिद्ध माला होती है, शिव सम्बन्धी साधनाएं रुद्राक्ष माला से करते है, लेकिन महामृत्युंजय साधना तो केवल रुद्राक्ष बीजों की माला से ही सम्पन्न करनी चाहिए—

महामृत्युंजय मन्त्र

ॐ ह्रौं जूं सः, ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्ध-नान्मृत्योर्मुक्षीय ममृतात्। स्वः भुवः भूः। सः जूं ह्रौं ॐ॥

यह मन्त्र सम्पुटित मन्त्र है, पूर्ण सिद्धि विधान में तो सवा लाख मन्त्र जप का उल्लेख है, भयंकर से भयंकर रोग की शान्ति भी इस विधान से अवश्य ही प्राप्त हो जाती है।

किसी अन्य के लिए प्रयोग करते समय एक शुद्ध तांबे के पात्र में जल भर कर सामने रखना चाहिए और मन्त्र जप कर प्रतिदिन यह जल रोगी को पिलाना चाहिए।

उपरोक्त साधना तो रोग शान्ति की महत्वपूर्ण साधना है, इसके अतिरिक्त शरीर में, चेहरे पर तेज उत्पन्न करने के लिए कुछ अन्य साधनाएं भी आवश्यक हैं, सूर्य साधना साधक को तेजस्वी बनाती है, और सूर्य का मूल आधार ओंकार उपासना है, गायत्री साधना भी सूर्य की ही साधना है, प्रतिदिन सूर्योदय से पहले उठ कर अपना नित्य कर्म, पूजन कर सूर्य नमस्कार अवश्य करना चाहिए, और सूर्य की ओर मुंह कर यह भावना व्यक्त करनी चाहिए कि सम्पूर्ण सूर्य का प्रभाव मेरे शरीर पर पड़ रहा है, सूय का तेज किरणों द्वारा मेरे भीतर प्रवाहित हो रहा है, इस प्रकार की भावना कर एक माला सूर्य गायत्री का जप अवश्य करना चाहिए।

सूर्य गायत्री मन्त्र

ॐ भास्कराय विद्महे, दिवाकराय धीमहि तन्नो सूर्य्यः प्रचोदयात्।

पवन पुत्र हनुमान को बल, वीर्य, पराक्रम का देव माना गया है, हनुमान साधना जो भी व्यक्ति सम्पन्न करता है, उस के मन से भय का नाश हो ही जाता है, आधी रात को साधक अकेला श्मशान में जा कर भी खड़ा हो जाय और हनुमान मन्त्र अथवा हनुमान चालीसा का पाठ करता रहे, तो भूत-प्रेत भी पास फटकने की हिम्मत नहीं कर सकते, यदि साधक अपने भीतर थोड़ी भी मानसिक दृढ़ता ला कर प्रति मंगलवार दिन भर व्रत रख कर अर्द्ध रात्रि के समय **महामाहेश्वर रुद्रावतार हनुमान यन्त्र** स्थापित कर उस पर तेल, सिन्दूर अर्पित कर **मूंगा माला** से निम्न हनुमान मन्त्र का एक माला भी जप कर ले, तो भूत-प्रेत, ग्रह-दोष, अमंगल का तो नाश होता ही है, साधक का शरीर भी पूर्ण स्वस्थ हो जाता है।

विशेष मन्त्र

ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः, ओं नमो भगवते महाबलपराक्रमाय भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्म-राक्षस-शाकिनी डाकिनी-यक्षिणी-पूतना-मारी महा मारी-राक्षस भैरव वेताल-ग्रह-राक्षसादिकान् क्षणेन हन हन भंजय भंजय मारय मारय शिक्षय शिक्षय महामाहेश्वररुद्रावतार ॐ हूं फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते हनुमदाख्याय रुद्राय सर्व-दुष्टजनमुखस्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ठं ठं फट् स्वाहा।

शरीर रक्षा, देह सिद्धि के लिए हनुमान साधना पूर्ण साधना कही गई है, इससे बढ़ कर और कोई सरल उपाय नहीं है, लेकिन अन्त में साधकों से एक निवेदन अवश्य है कि अपने शरीर की ओर, अपनी देह की ओर भी ध्यान देते हुए योग, प्राणायाम, त्राटक का विकास करें और अपने शरीर से रोगों को दूर रखें। ●

आमन्त्रण है सभी साधक भाइयों को

सभी साधक भाई-बहिनों को निमन्त्रण देते हुए हर्ष है कि आश्विन नवरात्रि का पावन पर्व दिनांक ४-४-९२ से ११-४-९२ तक है और यह **"विजय पर्व"** **गुरु शक्ति पीठ जोधपुर** में आयोजित है, पूज्य गुरुदेव के चरणों में अपने आपको समर्पित करते हुए उनसे सब कुछ प्राप्त करने का अद्वितीय मौका, क्योंकि इस बार तो गुरुदेव **शक्ति विजय तत्व** शिष्यों को सौंप देना चाहते हैं गुरुदेव अपनी दोनों बाहें फैलाये अपने आत्मीय पुत्रों को अपने आपमें निमग्न कर लेना चाहते हैं, अतः आप सब के लिए ऐसे दुर्लभ क्षण जीवन में बार-बार नहीं आएंगे इसलिए आप सब इस पावन पर्व पर पहुंच कर....।

दस महाविद्या दिवस

(शनिवार—२८-३-९२)

वर्ष का यही दिन दस माता दिवस कहलाता है

क्योंकि

यह माता गौरी शक्ति संहारिणी से प्रस्फुटित दस शक्तियों का दिवस है

दस महाविद्याएं दस प्रकार की शक्तियों की प्रतीक देवियां हैं,- अलग-अलग कार्यों हेतु शिव के वरदान स्वरूप उनके शक्ति स्वरूप इन दस देवियों की उत्पत्ति मानी गई है, पूरे वर्ष में अलग-अलग महीनों में प्रत्येक महाविद्या का दिवस अवश्य आता है और उस समय साधक इनकी साधना कर अपना जीवन धन्य करते हैं, अपने जीवन में शक्ति के जिस तत्व की कमी होती है, उस कमी को पूरा करने के लिए विशेष महाविद्या की साधना अवश्य करते हैं, साधना में साधक आर्त मन से करुण हृदय से, आंसुओं की पुकार से महाविद्या का आह्वान करता है और साधक को साधना में सिद्धि का वरदान अवश्य प्राप्त होता है।

दस महाविद्याओं का स्वरूप भी निराला है, कोई देवी धन पक्ष की देवी है तो कोई संहार पक्ष की, यह तो प्रत्येक देवी के स्वरूप से ही स्पष्ट है।

१-काली महाविद्या–शक्ति संहार की महाविद्या, उग्र स्वरूप, २-तारा महाविद्या–बुद्धि, ज्ञान, आकस्मिक लाभ, शक्ति महाविद्या, ३-षोडशी त्रिपुर सुन्दरी–पुरुषार्थ, पराक्रम, आनन्द, सौभाग्य, गृहस्थ सुख शक्ति महाविद्या, ४-भुवनेश्वरी–ऐश्वर्य सम्पन्नता, मनोरथ सिद्धि की सौम्य शक्ति महाविद्या, ५-छिन्नमस्ता–बाधा हन्ता, शत्रु स्तम्भन, वशीकरण, बाधा शान्ति, राजकीय विजय की शक्ति महादेवी, ६-त्रिपुर भैरवी–भय नाश, आत्म शक्ति, भूत-प्रेत बाधा शान्ति, शक्ति की महाविद्या,

धूमावती-सम्पत्ति, स्थायी-तत्व, प्रचंड शत्रु नाश, आपत्ति निवारण, संतान रक्षा, की शक्ति की महाविद्या, ८-कमला महाविद्या-धन, अर्थ, व्यापार, सम्पत्ति, मान-सम्मान, स्व ... शक्ति की महाविद्या, ९-बगलामुखी-त्रिशक्ति, काली कमला भुवनेश्वरी का संयुक्त स्वरूप, अभय सिद्धि, रक्षा की प्रधान महाविद्या, १०-मातंगी-वाणी विलास आनन्द भावना, प्रेरणा, काम सरसता की शक्ति स्वरूप महाविद्या।

इस प्रकार दस महाविद्याओं का स्वरूप निराला है, उनका साधना क्रम अलग-अलग है, योग्य साधक जानते हैं कि किस समस्या के लिए किस साधना को सम्पन्न किया जाय, तात्कालिक फल प्राप्ति के लिए किस महाविद्या की उपासना की जाय, दस महाविद्याओं का एक साथ ध्यान करना सम्भव नहीं है लेकिन ?

वर्ष में एक दिन ऐसा भी

दस महाविद्या साधना के लिए नवरात्रि का प्रमुख विधान है, इसके अतिरिक्त प्रत्येक महाविद्या का साधना हेतु नियत दिवस है, पर वर्ष में एक दिवस ऐसा भी है, जिसे दस माता दिवस कहा जाता है, और यदि यह कहा जाय कि दस महाविद्या साधना के लिए सम्पूर्ण मुहूर्त युक्त तान्त्रोक्त सिद्धि युक्त यह दिवस है, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी क्योंकि इसी दिवस के दिन शिव की शक्ति महागौरी से दस महाविद्याओं का प्रादुर्भाव हुआ था, यह दिवस है—**चैत्र कृष्ण पक्ष तिथि दशमी शनिवार तारीख २८ मार्च ९२** और याद रखें कि यह दिन पूरे वर्ष में केवल एक बार आता है, इस मुहूर्त पर चूक गये तो इन्तजार करना पड़ेगा अगले सिद्ध मुहूर्त हेतु पूरे एक वर्ष !

इस दिन क्या करें ?

तांत्रिक साधना हो अथवा मांत्रिक साधना, सात्विक साधना हो अथवा तीव्र साधना, उग्र हो अथवा सौम्य मुहूर्त सिद्धि से कार्य करने से ही सफलता प्राप्त होती है, इस महत्वपूर्ण सिद्धि दिवस को सब बातें भूला कर तैयार हो जांय विशेष साधना हेतु।

बनना है पूर्ण पुरुष

पूर्ण पुरुष वही कहलाता है, जिसके जीवन में सभी प्रकार के सुख हों, सभी शक्तियों का आशीर्वाद हो, यदि धन है लेकिन स्वास्थ्य नहीं है, सब कुछ है लेकिन संतान सुख नहीं है, आर्थिक स्थिति श्रेष्ठ है लेकिन शत्रु प्रबल हैं तो जीवन पूर्ण नहीं है, अतः इस दिन जीवन में पूर्णता हेतु दसों महाविद्याओं का आह्वान एक साथ करना है, मातंगी की कृपा प्राप्त करनी है तो बगलामुखी का आह्वान कर शत्रुओं पर विजय प्राप्त करनी है, धन की अधिष्ठात्री महाविद्या कमला की कृपा आवश्यक है तो जीवन शेर की तरह जीने के लिए महाकाली का वरदहस्त भी आवश्यक है, इन सब कारणों से इस महान दिवस का महत्व और भी अधिक हो जाता है।

इस दिवस को साधक ब्रह्म मुहूर्त में ही उठकर स्नान कर अपना नित्य कर्म सम्पन्न कर इस विशेष साधना के लिए अपने आपको तत्पर कर लें, गुरु मन्त्र की एक माला का जप कर गुरु पूजन सम्पन्न कर अपने आपको मानसिक रूप से तैयार कर लें कि मुझे इस दिवस को इस वर्ष का महत्वपूर्ण दिवस स्थापित करना है, एक-एक क्षण का पूरा उपयोग करना है, यदि घर में एकान्त की सुविधा न हो तो किसी अन्य स्थान पर जा कर साधना सम्पन्न करें, सात्विक भोजन अर्थात् केवल दूध तथा फलहार ही ग्रहण करना है।

दस महाविद्याओं के सम्मिलित स्वरूप हेतु संयुक्त **"दस महाविद्या महायन्त्र"** आवश्यक है, इस यन्त्र को स्थापित करने से पहले स्थान को साफ स्वच्छ कर जल छिड़क कर एक लाल कपड़ा बिछा कर मध्य में यन्त्र को स्थापित कर प्रत्येक महाविद्या का ध्यान कर पूजन सम्पन्न करें, यह पूजन केवल कुंकुम से सम्पन्न करना है, अपने सामने दस फल और दस पुष्प स्थापित कर प्रत्येक पर

एक-एक अगरबत्ती जला दें और फिर ऊपर दिये गये क्रमानुसार साधना प्रारम्भ करें, इस प्रकार प्रत्येक महा-विद्या के मन्त्र की एक माला और फिर एक माला गुरु-मन्त्र का जप कर साधना करें, सर्वप्रथम काली का मन्त्र जप कर पूर्ण श्रद्धा सहित उसके लिए अर्पित फल को ग्रहण कर लें, फिर पुनः एक माला गुरु मन्त्र का जप कर तारा के मन्त्र का जप करें और तारा महाविद्या प्रसाद ग्रहण कर लें, इस प्रकार यह क्रम पूरा होने के पश्चात् गुरु आरती सम्पन्न कर शान्त भाव से उसी स्थान पर कम से कम ढाई घड़ी अर्थात् एक घण्टे तक बैठ कर अपने जीवन की समस्त कमियों, बाधाओं के निराकरण हेतु प्रार्थना करें—

काली मन्त्र

।। ॐ ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिण कालिके क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं ।।

तारा मन्त्र

।। ऐं ओं ह्रीं स्त्रीं हूं फट् ।।

त्रिपुर सुन्दरी मन्त्र

।। ह्रीं कएईल ह्रीं हसकलह ह्रीं सकल ह्रीं ।।

भुवनेश्वरी मन्त्र

।। ऐं ह्रीं श्रीं ।।

छिन्नमस्ता मन्त्र

।। ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा ।।

त्रिपुर भैरवी मन्त्र

।। हसैं हसकरी हसैं ।।

धूमावती मन्त्र

।। धूं धूं धूमावती ठः ठः ।।

कमला मन्त्र

।। ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं ।।

बगलामुखी मन्त्र

।। ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धि नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ।।

मातंगी मन्त्र

।। ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा ।।

जो साधक किसी एक महाविद्या को सिद्ध करना चाहता है तो उस विशेष महाविद्या का यन्त्र स्थापित कर केवल उसका मन्त्र जप अनुष्ठान भी कर सकता है।

दस महाविद्या अनुष्ठान हेतु **"तांत्रोक्त महामाया महामाला"** जो पूर्ण अनुष्ठान एवं प्राण संचारित मन्त्रों से चैतन्य है, उसी से मन्त्र जप सम्पन्न करें इस माला को अपने प्राणों से प्रिय समझें।

इस प्रकार पूजन समाप्त कर साधक अपने जीवन में साधना का एक महत्वपूर्ण अध्याय जोड़ता है, घर आकर प्रेम से अपने परिवार के साथ भोजन करें, संभव हो तो कुछ दान-दक्षिणा, उपहार अवश्य दें।

याद रखें कि जीवन में आगे बढ़ना है, और जीवन का नियंत्रण आपके आपने हाथ में रखने के लिए दस महाविद्याओं की अनंत कृपा आवश्यक है। ●

यह तंत्र तो तामसी, तीव्र तंत्र है

क्योंकि

भयंकर उन्मत्त भैरव का तंत्र है

तन्त्र के सम्बन्ध में जितनी विरुद्ध धारणाएं हैं, और जिस कारण तन्त्र को मैली विद्या पीड़ा पहुंचाने वाली क्रिया कहा गया है, वह सब इस डामर तन्त्र के सम्बन्ध में है, इसका वास्तविक स्वरूप तो निराला है, क्योंकि इसमें भूत, पिशाच, प्रेत की सिद्धि कर बुराई से बुराई पर विजय पाने की तन्त्र प्रक्रिया है।

तंत्र की हजारों शाखाओं का स्वरूप अलग-अलग है, साधना क्रियाएं एक दूसरे से विपरीत हैं, लेकिन दुर्भाग्य है कि तन्त्र का शुद्ध रूप से प्रचार प्रस्तुतीकरण बहुत कम हुआ है, इस कारण सामान्य जन में इसके प्रति फैली धारणाएं गन्दे रूप से ही विकसित हुई है, डामर तन्त्र श्मशान साधनाओं का स्वरूप है, जहां किसी भी तन्त्र क्रिया से किसी भी अन्य सात्विक अनुष्ठान से कार्य न पूर्ण हो तो "डामर तन्त्र" ही एक मात्र उपाय बचता है, यह वह तन्त्रास्त्र है जिसका वार कभी खाली नहीं जाता है, कहावत है कि लोहे को लोहा काटता है, उसी प्रकार प्रेत बाधा जैसे तीव्र प्रयोगों को शान्त करने हेतु, प्रबल शत्रु के नाश हेतु इस राक्षसी तन्त्र का सहारा लिया जाता है।

महाकाय उन्मत्त भैरव

भूत डामर तन्त्र के आदि देव क्रोध भैरव हैं और जो व्यक्ति डामर तन्त्र का प्रयोग करता है, उसे भैरव के इस स्वरूप की नित्य प्रति साधना अवश्य करनी चाहिए, क्रोध भैरव के क्रोध के सम्बन्ध में लिखा है कि इनका स्वरूप वियोम वक्त्र, वज्रपाणी, सुरान्तक, क्रोध अधिपति,

आकाश रूपी मुख वाले, महाकाय, प्रलय अग्नि की प्रभा के समान देदीप्यमान, अभेद-भेद कारक, रौद्र रूपी देवों और सिद्धों दोनों द्वारा नमस्कृत, त्रिलोकी के अधिपति का स्वरूप है जिनके आधीन सारे भूत-प्रेत, पिशाच, भैरव-भैरवियां हैं उन क्रोध भैरव को, उन्मत्त भैरव को बार-बार नमस्कार है।

डामर तन्त्र की साधनाओं का स्वरूप निराला ही है, इसमें मूल रूप से भूत-सिद्धि, वशीकरण, सर्व स्तम्भन, मारण की साधनाएं हैं इसके अलावा वाक् सिद्धि काम्य सिद्धि का विधान भी मुख्य रूप से लिखा गया है, शरीर सम्बन्धी किसी भी प्रकार के दोष दूर करने हेतु डामर-तन्त्र से श्रेष्ठ कोई उपाय नहीं है।

अब प्रश्न यह उठता है कि डामर तन्त्र का उपयोग कब किया जाय, और किस प्रकार किया जाय, जिससे तन्त्र का प्रयोग करने वाले साधक को स्वयं भी कोई हानि नहीं पहुंचे और सकल मनोरथ कार्य भी सिद्ध हो जांय, इस हेतु शास्त्रोक्त कथन है कि—

एक वृक्षे देवगेहे वने वज्रधरालये।
निम्नगासंगमे वापिपितभूम्यावथापिता।
सिद्धयन्तिभूतभूतिन्यो नृणाभीष्ट फलप्रदाः ॥

अर्थात् किसी वृक्ष के नीचे, शिवालय में, वन में, नदी के संगम पर अथवा श्मशान में बैठ कर उपासना करने से भैरव और भैरव के सहयोगी भूत इत्यादि की सिद्धि प्राप्त होती है, और मनुष्य को इष्टफल मिलता है।

जब साधक के जीवन को ही शत्रु द्वारा संकट उत्पन्न हो जाय अथवा शत्रु ने उसे द्वेष भाव से पीड़ा अथवा हानि पहुंचाई हो, धन हरण कर लिया हो, विरुद्ध प्रयोग किया हो, तो डामर तन्त्र का प्रयोग करना चाहिए।

उन्मत्त भैरव और उन्मत्त भैरवियां

उन्मत्त भैरव साधना में जब भैरव पूजन किया जाता है तो उनके साथ आठ उन्मत्त भैरवियों का पूजन करना अनिवार्य है, ये आठ उन्मत्त भैरवियां हैं—

१-शशि देव्या, २-तिलोत्तमा, ३-कांचनमाला, ४-कुलहारिणी, ५-रत्नमाला, ६-रम्भा, ७-उर्वशी, ८-रमाभूषिणी।

केवल कृष्ण पक्ष में ही डामर तन्त्र से सम्बन्धित साधनाएं सम्पन्न की जाती हैं।

साधना क्रम

उन्मत्त भैरव की साधना का क्रम सभी साधनाओं में एक है, लेकिन अलग-अलग कार्यों हेतु अलग-अलग प्रकार के मन्त्र का विधान दिया गया है, इसे ध्यान में रखना आवश्यक है।

भैरव साधना में भूत-प्रेत, पिशाच इत्यादि शक्तियों का आह्वान किया जाता है और भैरव द्वारा इन शक्तियों से ही इच्छित कार्य सम्पन्न कराया जाता है, इस कारण साधक को कई बार बड़े ही विचित्र अनुभव होते हैं, साधना करते समय ऐसा लग सकता है मानो पृथ्वी घूम रही है, पंखों की फड़फड़ाहट, विचित्र ध्वनियां, सामग्री का इधर-उधर होना, दीपक की लौ तीव्र हो जाना, मुर्दे की गन्ध इत्यादि अनुभव हो सकते हैं लेकिन जिसे सिद्धि प्राप्त करनी है और जो दृढ़ संकल्प से साधना करना चाहता हो उसे डामर तन्त्र का प्रयोग करने से पहले पूर्ण विधि-विधान सहित गुरु-पूजन अवश्य ही सम्पन्न कर लेना चाहिए, गुरु साक्षात् शिव स्वरूप होते हैं और जहां गुरु पूजन होता है, वहां साधना के मार्ग की आपदाएं अपने आप शान्त हो जाती हैं, **(जनवरी १९९२ के अंक में तांत्रोक्त गुरु पूजन दिया गया है उस ओर साधक विशेष ध्यान दें)।**

साधना विधान क्रम

जैसा कि ऊपर लिखा है, यह साधना एकान्त में सम्पन्न करनी चाहिए और साधना के दौरान बार-बार विघ्न न पड़े और न ही किसी वस्तु के लिए उठना पड़े, तो साधक को पूर्ण सामग्री की व्यवस्था पहले से कर लेनी चाहिए, इस हेतु **'तन्त्र कार्य कालचक्र उन्मत्त भैरव महायन्त्र', 'अष्ट भैरवी चक्र'** आठ मिट्टी के दीपक, तेल, फल, आठ सुपारी, तिल, सिन्दूर, सुरा, लाल वस्त्र, काला वस्त्र की व्यवस्था आवश्यक है।

जिस एकान्त स्थान पर प्रयोग कर रहे हैं, वहां काला वस्त्र बिछाएं और उस पर दो तिल की ढेरियां बना कर एक पर **उन्मत्त भैरव महायन्त्र,** और एक पर **अष्ट भैरवी महायन्त्र,** स्थापित करें उसके चारों ओर तिल से ही एक गोल घेरा बनाएं, अब इस गोल घेरे के भीतर कुछ भी सामग्री नहीं रखनी है, इसके बाहर आठ दीपक चारों ओर जला दें, सिन्दूर से भैरव की पूजा करें—

ॐ नमस्तेऽमृतसम्भूते बलवीर्यवर्द्धिनि ।
बलमायुश्च मे देहि पापान्मे त्राहि दूरतः ।।

हे अमृत सम्भूते ! मुझे बल वीर्य और दीर्घ आयु प्रदान करें, मेरे पाप राशि को ध्वस्त करें, मैं भैरव साधक आप को बार-बार प्रणाम करता हूं ।

तत्पश्चात् सुरा का अर्पण भैरव यन्त्र पर करना चाहिए, फिर २१ बार निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—

ॐ विष वज्रजालेन हं हं सर्वभूतान् हुं फट्
ॐ वज्रमुखे सर-सर फट् ।।

अब साधक को धूप लोबान प्रज्वलित करना चाहिए ।

अष्ट भैरवी पूजन में **अष्ट भैरवी यन्त्र** पर ईत्र, केसर से तिलक कर दोनों हाथ जोड़ कर निम्न अष्ट भैरवियों का आह्वान करें —

ॐ ह्रीं शशिदेव्या, ॐ ह्रीं तिलोत्तमा, ॐ ह्रीं कांचनमाला, ॐ हुं कुलहारिणी, ॐ हुं रत्नमाला, ॐ हुं रम्भा, ॐ श्रीं उर्वशी, ॐ रमाभूषिणी ।।

इस प्रकार पूजन कर वीर मुद्रा में बैठ कर साधक एक पुष्प माला अर्पित कर अपनी साधना प्रारम्भ करें, अब अलग-अलग कार्यों हेतु अलग-अलग मन्त्रों का जो विधान और जप संख्या है, वह स्पष्ट की जा रही है—

डामर वशीकरण प्रयोग

प्रथम मन्त्र

।। ॐ ह्रूं स्वाहा ।।

इच्छित व्यक्ति का नाम लेकर अपने नाम के साथ उच्चारण कर उस मन्त्र की ११ माला जप करना चाहिए ।

द्वितीय मन्त्र

।। भ्रां भ्रां भ्रां हां हां हां हें हें ।।

पांच हजार मन्त्र जप भैरव माला से करने से मनुष्य तो क्या देवता भी साधक की ओर आकर्षित होते हैं ।

सौभाग्य विधान

डामर तन्त्र के अनुसार—पुष्य नक्षत्र में श्वेतार्क की जड़ उखाड़कर दाहिने बाहु में बांधने से अत्यन्त दुर्भाग्यशाली व्यक्ति भी पूर्ण सौभाग्य को प्राप्त करता है ।

स्तम्भन प्रयोग

स्तम्भन मन्त्र

।। ॐ ह्रीं महिषमर्दिनी लह लह हल हल कठ कठ स्तम्भय स्तम्भय (अमुक) स्वाहा ।।

उन्मत्त भैरव तथा भैरवी यन्त्र का सम्पूर्ण पूजन कर दक्षिण दिशा की ओर मुंहकर रोज एक माला इस मन्त्र का जप करने से प्रबल शत्रु को भी स्तम्भित किया जा सकता है ।

भूत-प्रेतादि दोष निवारण प्रयोग

भैरव पूजन कर अपने सामने एक सरसों की ढेरी बना कर इस मन्त्र से अभिमन्त्रित कर बाधा ग्रस्त, रोगग्रस्त, व्यक्ति पर मन्त्रोच्चार करते हुए सरसों का प्रहार करें तो सभी प्रकार के दोष दूर हो जाते हैं ।

मन्त्र

।। ॐ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रः ह्रः फट् स्वाहा ।।

डामर तन्त्र का विधान लम्बा-चोड़ा है जीवन में हजारों बाधाएं हैं तो उनकी शान्ति के लिए हजारों प्रयोग हैं, डामर तन्त्र में उपरोक्त विवरण के अलावा विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों, औषधियों श्मशान प्रयोगों का भी विशद विवरण आता है, गुरु कृपा से आगे के अंकों में इसकी चर्चा अवश्य करेंगे । ●

सामग्री, जो आपकी साधनाओं में सहायक हैं

साधनाओं में सफलता प्राप्त करने के लिए विशिष्ट उपकरणों की आवश्यकता होती है, अतः प्रस्तुत अंक में जिन साधनाओं का विवरण दिया गया है उनसे सम्बन्धित चैतन्य, मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त सामग्री, साधकों की सुविधा के लिए उचित मूल्य पर उपलब्ध कराने हेतु कार्यालय ने व्यवस्था की है।

आप केवल पत्र द्वारा सूचित कर दें कि आपको कौन-कौन सी सामग्री चाहिए, हम डाक व्यय लगा कर, वह सामग्री वी०पी० द्वारा भेजने की व्यवस्था कर देंगे, जिससे सामग्री आपको उचित समय पर सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सकेगी।

साधना प्रयोग	पृष्ठ संख्या	सामग्री नाम	न्यौछावर
महाशिवरात्रि अमृत पर्व	६	महाशिवरात्रि प्रयोग पैकेट	३६०)रु०
सिद्ध सहस्राक्षी लक्ष्मी प्रयोग	१३	इन्द्रकृत सहस्रलक्ष्मी महाविद्या पैकेट	२४०)रु०
होली पर्व-परा-अपरा साधनाएं	१७	—	—
—भूत प्रत्यक्ष सिद्धि	१८	भूत यक्षिणी चेटक	४८)रु०
		महामालिनी यन्त्र	९०)रु०
		भूत दर्शन गुटिका	६०)रु०
		सिद्धि निर्माल्य	३०)रु०
		सियारसिंगी	७५)रु०
साबर साधनाएं—व्यापार वृद्धि प्रयोग	१९	सियारसिंगी	७५)रु०
वशीकरण प्रयोग	२०	वशीकरण यन्त्र	१५०)रु०
सौभाग्य पंचमी प्रयोग	२१	सौभाग्य प्राप्ति यन्त्र	२१०)रु०
		स्फटिक माला	८०)रु०
अन्नपूर्णा शंख प्रयोग	२५	अन्नपूर्णा शंख	३००)रु०
		माला—रुद्राक्ष-३००/-, हकीक-११०/-, स्फटिक-८०/रु०	
देह सिद्धि-परम सिद्धि	१९	महामृत्युंजय भैरव यन्त्र	२४०)रु०
		प्रक्रीती व चक्रीती	६०)रु०
		रुद्राक्ष बीज माला	३००)रु०
—सूर्य गायत्री प्रयोग	३३	महामाहेश्वर रुद्रावतार हनुमान यन्त्र	१२०)रु०
डामर तन्त्र प्रयोग	३७	उन्मत्त भैरव महायन्त्र	१५०)रु०
		अष्ट भैरवी चक्र	११०)रु०
		भैरव माला	१५०)रु०

के अत्यन्त नजदीक इतने बड़े पण्डाल की व्यवस्था करना वास्तव में सराहनीय है, इसका एक मात्र उद्देश्य यही है कि हमारे सिद्धाश्रम साधक परिवार के सभी सदस्य, मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान पत्रिका के सभी सदस्य, पूज्य गुरुदेव के सभी शिष्य एक ही स्थान पर ठहर सकें, आवास, भोजन, पूजन की सामूहिक व्यवस्था हो सके।

कल्पवास समय

इस कुम्भ के चार कल्पवास पर्व हैं और इनका समय ८ फरवरी से १३ अप्रैल तक है, लेकिन सबसे सर्वोत्तम माहात्म्य मुहूर्त २७ फरवरी से ४ मार्च के सात दिवस हैं, इन सात दिवसों में पूज्य गुरुदेव अपने शिष्यों के साथ हरिद्वार में ही निवास करेंगे।

कुम्भ कल्पवास कार्यक्रम

२७ फरवरी—उद्घाटन, यज्ञ एवं शिविर प्रातः ११ बजे
विशिष्ट मन्त्रों का जप एवं विश्व कल्याण निमित्त विशिष्ट मन्त्रों से आहुति
२८ फरवरी—दुर्गा साधना तथा प्रयोग एवं आहुति समर्पण
२९ फरवरी - महाकाली साधना तथा प्रयोग एवं आहुति समर्पण
१ मार्च —बगलामुखी साधना तथा प्रयोग एवं आहुति समर्पण
२ मार्च —छिन्नमस्ता साधना तथा प्रयोग एवं आहुति समर्पण
३ मार्च —महालक्ष्मी साधना तथा प्रयोग एवं आहुति समर्पण
४ मार्च —महामृत्युंजय साधना तथा प्रयोग एवं पूर्णाहुति

कल्पवास नियम

१-हरिद्वार में सम्पूर्ण कल्पवास तो ८ फरवरी से १३ अप्रैल तक है, और इस पूरे समय सिद्धाश्रम साधक परिवार का टेन्ट अर्थात् रहने, ठहरने साधना सम्पन्न करने की विशेष व्यवस्था रहेगी, आपका स्वागत है।

२-विशेष पूजन ऊपर लिखे कल्पवास २७ फरवरी से ४ मार्च तक होगा, इस समय पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में साधना कार्य सम्पन्न कराया जायेगा।

३ इस विशेष रुद्रमहायज्ञ एवं शिव-शक्ति साधना कल्पवास का शिविर शुल्क ६६०)रु० रखा गया है।

४-इस धनराशि में आपके रहने, भोजन की व्यवस्था, तथा यज्ञ हेतु आवश्यक सामग्री सम्मिलित है।

५-इस कुम्भ के अवसर पर तो पूरे परिवार सहित अवश्य आना चाहिए, जो सदस्य अतिरिक्त होंगे और शिविर में भाग न ले कर केवल आहुतियों के समय आपके साथ बैठेंगे उनसे मात्र १००)रु० शुल्क लिया जायेगा।

६-इसके लिए आप पत्र व्यवहार मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर से करें तथा धनराशि भी इसी पते पर भेजें।

७-यह आयोजन हर साधक के जीवन का एक महत्वपूर्ण प्रमुख अध्याय होगा, मुख्य स्नान महाशिवरात्रि २ मार्च को सम्पन्न होगा।

८-शिविर संपर्क पता व सिद्धाश्रम कुम्भ समिति कार्यालय-होटल मिड टाउन, डाकखाने के पास, मेन रोड हरिद्वार।

शिविर स्थल :—**सिद्धाश्रम साधक परिवार**

ब्लॉक-ई, पंतदीप सेक्टर, (हर की पैड़ी के पास) हरिद्वार (उ०प्र०)

रजि० नं० । ३५३०५/८१ पोस्टल एल०आर०जी० । १६६७/८६-८७

उपवन को आमंत्रण

४ अप्रैल १९९२ से नवरात्रि के विराट पर्व पर जोधपुर स्थित गुरुधाम में "सिद्धि महोत्सव" उत्सव सम्पन्न होने जा रहा है, जिसमें समस्त विश्व में फैले सिद्धाश्रम साधक परिवार के सदस्य, शिष्य एवं साधक एकत्र होंगे, और चार से दस अप्रैल तक पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में उन सिद्धियों को प्राप्त कर सकेंगे, जो गोपनीय महत्वपूर्ण अपूर्व और अद्वितीय हैं।

चारों तरफ प्रेम का अपूर्व रास, वसन्त की सुगन्ध से आपूरित नृत्य, साधक-साधिकाओं की खिलखिलाहट, कुण्डलिनी जागरण की चेतना, क्रियायोग की मीठी चुभन, भगवती जगदम्बा साधना की रिमझिम और समस्त सिद्धियों को प्राप्त करने का अपूर्व अवसर।

पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में आत्म रूपान्तरण के हजार-हजार ढंग पहली बार इसी सत्र में।

आप इस महानृत्य के महारास में महकते हुए थिरकन प्राप्त करें, आपको आमन्त्रण है।

। सम्पर्क ।

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१
(राजस्थान)